



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

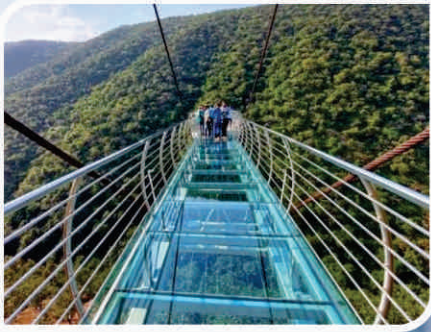
ग्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 34

अंक : 69 वाँ

संयुक्तांक (अप्रैल, 2023-सितम्बर, 2023)



ग्लास ब्रिज राजगीर



बाल्मीकि टाईगर रिजर्व



ककोलत जलप्रपात

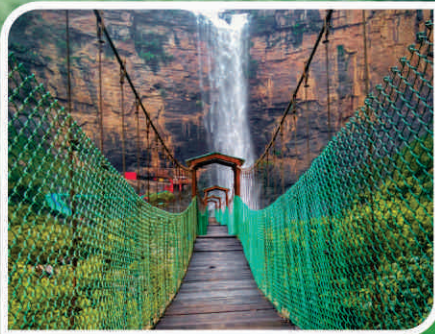


गांगेय डाल्फिन

प्राकृतिक सुन्दरता
से
भरपूर बिहार



भी.टी.आर. टाईगर



तुतला भवानी झरना



धुआं कुण्ड



मांझर झरना

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

प्रहरी परिवार



श्री विशाल बंसल
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



सुश्री पुष्पलता
उपमहालेखाकार



श्री शिव शंकर
उपमहालेखाकार



श्री ओंकार
उपमहालेखाकार



श्री के.एस.एम. रफी
उपमहालेखाकार



श्री सुजय कुमार सिन्हा
उपमहालेखाकार



श्री राकेश रोशन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री दिवाकर राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री विनय कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री मनोज कुमार नं.1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री शंकरा नन्द झा
हिन्दी अधिकारी



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

कार्यालयीन त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

69वाँ अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
महालेखाकार भवन,
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001

69वाँ

प्रहरी

03



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 34

अंक : 69 वाँ

संयुक्तांक (अप्रैल, 2023-सितम्बर, 2023)

स्वत्वाधिकार

: प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

प्रकाशन

प्रहरी

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने हैं। उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

 संपादक मंडल

प्रकाशक

: राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

आवरण पृष्ठ

: बिहार की प्राकृतिक सुन्दरता

साज-सज्जा

: निशा ग्राफिक्स, नाला रोड, पटना-800 004
मो०- 9708124620

मूल्य

: राजभाषा हिंदी की निरंतर सेवा

साभार: पत्रिका में प्रकाशित चित्र गूगल साइट से लिया गया है। इसका उपयोग गैर व्यवसायिक है।

69वाँ

प्रहरी

04



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 34

अंक : 69 वाँ

संयुक्तांक (अप्रैल, 2023-सितम्बर, 2023)

प्रहरी परिवार

संरक्षक

श्री विशाल बंसल

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

परामर्शी

सुश्री पुष्पलता

श्री शिव शंकर

श्री ओंकार

श्री के.एस.एम. रफी

श्री सुजय कुमार सिन्हा

श्री राकेश रौशन

श्री दिवाकर राय

श्री विनय कुमार

उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार

उपमहालेखाकार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार नं.1

श्री राजू कुमार सिंह

श्री शंकरा नन्द झा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (संपादक)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिन्दी अधिकारी

69वाँ

प्रहरी

05

इस अंक में

क्रम0 सं0	रचना	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	आपका पत्र मिला			10-11
2.	सम्पादक की कलम से...			12
3.	ई-ऑफिस	लेख	राजू कुमार सिंह	13
4.	ओ. आई. ओ. एस.- एक सफरनामा	लेख	सुभाष वर्मा	16
5.	जंगल में जीवन	लेख	सत्य प्रकाश सिंह	18
6.	कदम	कविता	जयप्रकाश मल्ल	21
7.	स्वास्थ्य साक्षरता : वर्तमान समय की जरूरत	लेख	रविकांत पटेल	22
8.	औरत	कविता	अताउल्ला हुसैन	23
9.	माँ	कविता	अभिषेक	24
10.	उम्र की बाधा और मन की अभिलाषा	लेख	मनोज कुमार नं.-6	25
11.	विषैले बीज	कविता	राजू कुमार सिंह	29
12.	जब मैं भी बेरोजगार था	संस्मरण	पवन कुमार	30
13.	अति सर्वत्र वर्जयेत	लेख	हेमन्त कुमार	31
14.	कैसे करोगी तीज तुम	कविता	श्याम दत्त मिश्रा	32
15.	मौसम	कविता	सान्ची सिंह	33
16.	यात्रा देवभूमि की (मंदाकिनी)	लेख	कृष्ण मुरारी जयपुरियार	34
17.	बच्चों पर एंड्रायड के प्रभाव एक समालोचना	लेख	रुपेश कुमार सिंह	37
18.	मन के हारे हार है, मन के जीते जीत	कविता	श्रीमती दिव्या नाथ	42
19.	सेवानिवृत्ति			43
20.	श्रद्धांजलि			43
21.	अंधाधुंध शहरीकरण तथा अतिशय महत्वाकांक्षा...	लेख	शंकरा नंद झा	44
22.	नन्ही बेटी के नाम उसके पापा का पत्र	पत्र लेखन	आशुतोष अभिमन्यु	47
23.	मेट्रो	कविता	विकास कुमार	48
24.	कल्याण अनुभाग की गतिविधियाँ			49
25.	प्रशिक्षण और परीक्षा अनुभाग की गतिविधियाँ			49
26.	कार्यालयीन गतिविधियाँ	फोटो		50-53
27.	झूठ बोलता इंसान	कविता	मनोज कुमार नं.1	54
28.	बिहार का ईको टूरिज्म : वाल्मीकि टाईगर रिजर्व	लेख	कृष्ण मुरारी जयपुरियार	55
29.	सोशल मीडिया का सही उपयोग जरूरी है	लेख	सतीश चन्द्र	57
30.	कार्यालयीन गतिविधियाँ	फोटो		59-60

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार



संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि कार्यालय की गौरवशाली हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' के 69 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालयीन हिन्दी पत्रिकाएँ राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है साथ ही कार्यालय के कार्मिकों के भावों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ उनके सृजनात्मक प्रतिभा को भी मुखरित होने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करती है। इससे कार्मिकों में हिन्दी के प्रति स्नेह, लगाव व रुचि पैदा होती है तथा राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा मिलता है।

इस अंक में भी कई रचनाकारों ने अपने लेखों और कविताओं से पाठकों का ज्ञानवर्धन किया है। उनकी रचनाओं से संवेदनशीलता का भी परिचय मिलता है। प्रहरी के लगातार प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल के सदस्यों, रचनाकारों तथा पाठकों को मैं बधाई देता हूँ तथा सफलता के मुकाम की ओर पत्रिका हमेशा अग्रसर रहे इसकी शुभकामना देता हूँ।

जय हिन्द !

विशाल बंसल
(विशाल बंसल)

उपमहालेखाकार (प्रशासन)



संदेश

मैं हर्ष और गर्व से पत्रिका 'प्रहरी' के 69 वें अंक के सफल प्रकाशन का स्वागत करती हूँ। इस अंक का प्रकाशन एक उत्कृष्ट प्रयास है, जिससे हम सभी अत्यंत हर्षित हैं। कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में 'प्रहरी' की बड़ी भूमिका है। इस पत्रिका ने भारत सरकार के राजभाषा विभाग के लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। इस कार्यालय में मूल पत्राचार लगभग 96.5 प्रतिशत कार्य राजभाषा में संपादित हो रहा है। यह उपलब्धि पाने में सबका योगदान महत्वपूर्ण है, विशेषकर कार्यालय के रचनाकारों का, जिनकी सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता ने पत्रिका को सुंदरता से सँवारा है।

इस प्रकार के योगदान से हमारे कार्मिकों को प्रेरणा मिलती है और हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में सहायक होती है। मैं आशा करती हूँ पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ पाठकों को ज्ञानवर्धन के साथ-साथ प्रेरणा भी प्रदान करेगी।

मैं पत्रिका 'प्रहरी' के समर्पित संपादक मण्डल, रचनाकारों, पाठकों और सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देती हूँ। भविष्य में भी "प्रहरी" के एक सुंदर और सफल यात्रा की कामना करती हूँ।

जय हिन्द !

पुष्पलता

(पुष्पलता)

भारत सरकार/GOV.T OF INDIA
कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर - 751001
O/O THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR - 751001
स.रा.मा.अ./प.प्रति/37/2023-24/ 30 दिनांक: 23/05/2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिन्दी अनुभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार,
पटना
विषय:- हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 68वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 68वें अंक की ई-पत्रिका प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं उच्च कोटि की हैं। विशेष रूप से "ओआईओएस एक परिचय, किसलय, माँ, दुख तो होता है" आदि रचनाएँ रोचक, सारगर्भित एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,
21/2/2023
23/05/2023
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) पश्चिम बंगाल
Indian Audit And Accounts Department
Principal Accountant General (A&E), West Bengal
संख्या No. प्र.भा. हिंदी लेखापरीक्षा/2023-24/03
दिनांक Dated. 17.04.2023

सेवा में,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रहरी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन,
बीरभद्र पटेल मार्ग, पटना-800 001

विषय:- भारतीय लेखापरीक्षा हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 68वें अंक की ई-प्रति की पावती एवं अभिनंदन।

महोदय,
आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "प्रहरी" के 68वें अंक की एक ई-प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के आंतराल-पृष्ठ पर छापाविल छायाचित्र एवं पृष्ठों की साज-सज्जा बहुत ही सुंदर है, साथ ही साथ पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी राजभाषा गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, आनंददायक एवं संस्कारपूर्ण हैं। विशेषकर श्री वीरेंद्र साहू का लेख "आर्यवर्षा स्वर्ण" में कार्यलय ने किस तरह का व्यवहार करता चाहिए - इसको बहुत ही स्पष्ट किया गया है। श्री प्रभाज कुमार ने - 1 के लेख "बुलबुल का गान और बाघु धनुष" में बहुत ही अच्छा और उम्र के अनुपात में बहुत प्रशंसनीय काव्य का चित्रण बहुत ही अच्छे ढंग से किया है। श्री अरुण कुमार ने लेख "किसलय" में बहुत ही अच्छा काव्य लिखा है। श्री एन पी तनेजा के कविता "मरिचा" में विस्तृत रूप से विविधों की इन जलियाँ से जुड़ी घटनाओं का सफलतापूर्वक चित्रण किया है। इनके अलावा श्री के.एन. रायचंदरियार का काव्य संग्रह "सोपान" अत्यंत ही सराहनीय है।

पत्रिका के उम्र संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साभुवाएं तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(चन्द्र कुमार वर्मा)
हिन्दी अधिकारी/राजभाषा हिन्दी

इंजीनियरिंग, 2, गवर्नमेंट प्लेस, वेस्ट, कोलकाता - 700 001
Treasury Buildings, 2, Government Place West, Kolkata - 700 001
Phone: (033) 2213 8000, Fax: (033) 2246-7849
e-mail: agawestbengal@cag.gov.in Web Site: http://agwb.cag.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता - 700 001
संयोजक जयंती



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph: (033) 2213-3151/52, Fax: (033) 2213-3174
e-mail: agawestbengal1@cag.gov.in

संख्या-हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/09
दिनांक: 17.04.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
पटना
विषय:- कार्यालयीन हिन्दी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 68वें अंक की पावती।

महोदय,

पत्र क्रमांक हि.अ./प्रहरी/34/2021-22 दिनांक 11.04.2023 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 68वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय हैं। हमारे कार्यालय द्वारा भेजे गए पावती को आपके पत्र वाले भाग में शामिल किया गया है, इसके लिए पुनः धन्यवाद। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रान्त
17/04/23
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL
(AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020



संख्या/No.: हिन्दी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2023-24/29 दिनांक/Date: 18.04.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना
विषय:- प्रहरी के अंतरावर्षीय अंक का प्रेषण-संबंधित।
महोदय,

प्र. सं. हि.अ./ले.प./प्रहरी/34/2021-22 Hindi Section/Au./Prahari/34/2022-23
दिनांक 11.04.2023 द्वारा आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के अंतरावर्षीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय एवं स्वीकार्य हैं। दुर्भाग्यवश गहन और बाघु धनुष, "ऑफिट विरस पर आगेविल कार्यक्रम का प्रतिवेदन", जो बहुत ही अर्थपूर्ण, नव वर्ष सुभांत मनोर हो एवं सौभाग्यवश आदि रचनाएँ विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के साथ है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हिन्दी अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

सूचना: 0172-2600704, 2615377 ईमेल: 0172-2615377 2615377 & ...

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नाथ मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL TRAINING INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj - 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485



पत्रांक - क्षे.प्र.सं.(प्र.)विधि (पत्रिका पावती)(132)/2022-23/55 दिनांक : 19.04.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

विषय:- हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' का 68वां अंक ।

संदर्भ:- ईमेल के माध्यम से प्राप्त पत्र दिनांक 11 अप्रैल 2023.

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' का 68वां अंक प्राप्त हुआ । इसके लिए सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका की साज-सज्जा, कलेवर एवं मुद्रण बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं उच्च स्तर की एवं प्रशंसनीय हैं । इस अंक में प्रकाशित 'ओ आइ ओ एस-एक परिचय', 'कार्यालयीन व्यवहार', 'दोरा कार्यक्रम एवं आपका स्वास्थ्य', 'दुख तो होता है', 'अनुत्तरित प्रश्न' एवं 'सौराष्ट्र डायरी' रचनाएं विशेष रूप से ज्ञानवर्धक, सराहनीय एवं रोचक हैं ।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) लखनऊ तृतीय तल, ऑडिट भवन, टी.सी.-35-V-1, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ - 226010(उत्तर प्रदेश)

पत्रांक: प्र०नि०ले०प० (केंद्रीय)/प्रशासन/राजभाषा हिंदी/का०सं०-67/21 दिनांक: 19/04/2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना

विषय:- हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 68 वें अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 68 वें अंक पत्रांक: हि.अ./ले.प./प्रहरी/34/2021-22Hindi Section/Au./Prahari/34/2022-23/ दिनांक 11/04/2023 प्राप्त हुई है ।

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहरी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचना 'कार्यालयीन व्यवहार', 'गौरैया' एवं 'वक्त बुरा हो या अच्छा गुजर ही जाता है' बहुत ही आकर्षक है । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं अत्यंत रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं । पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएं

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन



कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग,
मुख्य शाखा, नवभवन, आर.के. मार्ग, बॉलार्ड इस्टेट, मुख्य-400001
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Director General of Audit, Environment and Scientific Departments,
Mumbai Branch, 3rd Floor, Nou bhavan, R.K. Marg,
Ballard Estate, Mumbai-400 001
Email: brydnumbail@cag.gov.in
Contact No.: 022-2082-3903/ 2146/ 4609, Fax: 022-2263-2414



सं. स्था./XIII(14)/विधि पत्रिकाएँ/भाग-III/2023-24/412

दिनांक: 05 JUN 2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

विषय: हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' के अरसठवें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय से संबंधित आपके कार्यालय के पत्र सं.हि.अ./ले.प./प्रहरी/34/2021-22 Hindi Section/Au./Prahari/34/2022-23 दिनांक: 11.04.2023 के संदर्भ में हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' के अरसठवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किया गया प्रयास अत्यंत सराहनीय है, एवं छाया पिपी का संकलन भी उत्तम है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सरस, ज्ञानवर्धक, रुचिकर एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

यह पत्र निदेशक के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सटन
भुवनेश्वर-751017(ओडिशा)



सं. - रा.भा.अ./पत्रिका/2023-24

दिनांक: 08.05.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार,
महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग,
पटना - 800001
ईमेल- ragubihar@cag.gov.in

विषय:- हिन्दी ई-पत्रिका 'प्रहरी' के 68वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका 'प्रहरी' का 68वाँ अंक प्राप्त हुआ हुआ, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएं
1.	जयप्रकाश मल्ल	कैलसल
2.	एस.पी. तनेजा	गौरैया
3.	के. एम. जयपुरियार	सौराष्ट्र डायरी
4.	राजू कुमार सिंह	ओ आई ओ एस - एक परिचय

इस पत्रिका को सफल एवं उत्कृष्ट बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीय,
(कीर्ति श्री)
हिन्दी अधिकारी

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarfycoasstr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com

सम्पादक की कलम से.....



यह सामान्य धारणा रही है कि बिहार में सिर्फ धार्मिक पर्यटन स्थल ही है, वर्तमान समय में यह धारणा बदल रही है। प्राकृतिक सुन्दरता के क्षेत्र में भी बिहार राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना रहा है। चंपारण का वाल्मीकी नेशनल उद्यान के अन्तर्गत वाल्मीकी व्याघ्र परियोजना, बांका का मंदार पर्वत, नवादा का ककोलत जलप्रपात, रोहतास का तुतला भवानी जलप्रपात, धुंआँ कुंड, कशिश झरना, सासाराम का मॉडर झरना, राजगीर वन्य सफारी, कांवर लेक वर्ड सेन्चुरी (बेगूसराय), जमुई भीम बाँध वन्यप्राणी अभ्यारण्य, सलीम अली-जुब्बा सहनी बर्ड सैन्चुरी (वैशाली), विक्रमशिला गंगा डॉल्फिन अभ्यारण्य, भागलपुर इत्यादि बिहार के प्राकृतिक सुन्दरता के स्थल हैं जहाँ सैलानियों की प्रत्येक वर्ष संख्या बढ़ रही है। पत्रिका के मुख्यपृष्ठ का विषय भी यही है।

इस अंक में कई रचनाकारों ने सोसल मीडिया और मोबाइल विषय पर अपने लेखों में इसके अधिक उपयोग को लत लगाने की श्रेणी में रखते हुए चिंता भी प्रकट किया है। खासकर बच्चों के द्वारा मोबाइल पर अधिक समय बिताने से उनके रचनात्मकता को बाधक के रूप में माना है। मोबाइल के हानिकारक प्रभावों का बच्चों पर कितना असर हो रहा है इस संबंध में अब पत्रिकाओं तथा समाचारपत्रों में लेख और समाचार पढ़ने को मिल रहे हैं। कई स्कूल/कॉलेज/शिक्षण संस्थानों ने अपने परिसर में मोबाइल के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया है। इस संबंध में मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों तथा शिक्षाविदों को मिलकर काम करना चाहिए और मोबाइल के लत का समाधान ढूँढ़ना चाहिए।

भारत सरकार का राजभाषा विभाग द्वारा इस वर्ष पुणे में तृतीय अखिल राजभाषा सम्मेलन आयोजित

किया गया है। पूर्व के वर्षों में प्रथम सम्मेलन वाराणसी (2021) में उसके बाद फिर सूरत में (2022) आयोजित किया गया था। मैं मानता हूँ कि देश के विभिन्न शहरों खासकर दक्षिण भारत के शहरों में हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) के दिन राजभाषा सम्मेलन किया जाना एक सराहनीय प्रयास है। इससे राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में काफी सहूलियत होगी और तेजी से लोकप्रिय हो सकेगा। दक्षिण भारत के राज्यों में हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ेगी।

हमारे कार्यालय में राजभाषा विभाग की नीतियों तथा वार्षिक कार्यक्रम का पूर्णतः पालन किया जाता है। निर्धारित लक्ष्यों से अधिक की प्रप्ति हम कर चुके हैं। कार्यालय कार्मिकों के बीच हिन्दी को लेकर उत्साह का वातावरण है। अनेक नये कार्मिकों ने 'प्रहरी' के लिए अपनी रचनाएँ देकर संपादक मंडल का भी उत्साहवर्द्धन किया है। रविकांत पटेल, रूपेश कुमार सिंह, आशुतोष अभिमन्यु, पवन कुमार और सुभाष वर्मा इत्यादि रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ देकर राजभाषा के प्रति सम्मान प्रकट किया है, अन्य रचनाकारों का सहयोग तो हमेशा मिलता ही रहा है। कई सेवानिवृत्त कर्मिक भी अपनी रचनाएँ देकर 'प्रहरी' से अपना नाता बनाये रखा है जो हमारे लिए प्रेरणास्त्रोत है। परामर्शी मंडल का मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहा है। सामान्य अनुभाग के सहकर्मी भी पत्रिका के प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। सबों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

पाठकों के प्रतिक्रिया का हमेशा स्वागत है।

आपका

(मनोज कुमार)

ई-ऑफिस



✍ **राजू कुमार सिंह**
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दूसरे प्रशासनिक सुधार आयोग ने अपनी 11वीं रिपोर्ट में सुशासन की प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में ई-गवर्नेंस को लागू करने की आवश्यकता पर बल दिया था। 'ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देना आगे बढ़ने का स्मार्ट तरीका' शीर्षक वाली रिपोर्ट दिसंबर, 2008 में जारी की गई थी और केंद्र सरकार के साथ-साथ राज्य सरकारों में भी ई-गवर्नेंस पहलों को विकसित करने के लिए लक्ष्य और व्यापक रूपरेखा निर्धारित की गई थी। नागरिकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए शासन को बदलने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने पर जोर दिया गया था।

ई-ऑफिस मिशन मोड प्रोजेक्ट- भारत के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना के तहत मिशन मोड प्रोजेक्ट में से एक है। सरकारी प्रक्रिया और सेवा वितरण तंत्र की दक्षता में सुधार के लिए यह परियोजना भारत के प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग द्वारा कार्यान्वित की जा रही है। यह परियोजना 2008 में 5 साल की अवधि के भीतर सरकारी कार्यालय को कागज रहित कार्यालय में बदलने की उम्मीद के साथ शुरू की गयी थी। परियोजना का उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक फाइल सिस्टम के साथ पुरानी मैनुअल प्रक्रिया को बदलकर उत्पादकता, गुणवत्ता, संसाधन प्रबंधन, टर्नअराउंड समय और पारदर्शिता में सुधार करना है।

ई-ऑफिस प्रणाली एक एकीकृत फाइल और रिकॉर्ड प्रबंधन प्रणाली है जो कर्मचारियों को सामग्री का प्रबंधन करने, आंतरिक रूप से डेटा खोजने और सहयोग करने की अनुमति देता है। फाइल सिस्टम इलेक्ट्रॉनिक मूवमेंट और फाइलों की ट्रैकिंग, और डेटा के अभिलेखीय और पुनर्प्राप्ति को

भी सक्षम बनाता है। इसके द्वारा नियमित कार्यों को स्वचालित करना, आवश्यक वर्कलोड को संभालने में सक्षम, निगरानी कार्य की सुविधा और देरी होने पर ऑटो-एस्केलेशन की सुविधा के साथ सिस्टम को सुरक्षित और गोपनीय रखने की योजना है।

अतएव ई-ऑफिस प्रणाली सरकारी विभागों के पत्र, नीति, अधिनियम, विनियम, नियमावली आदि जैसी फाइलों और दस्तावेजों के प्रबंधन का एक केंद्रीय डिजिटल भंडार है। यह एक डिजिटल कार्यस्थल समाधान (Digital Work Place Solution) है, जो ओपन आर्किटेक्चर पर बनाया गया है, जो इसे सरकारों में प्रतिकृति के लिए एक मानक पुनः प्रयोज्य उत्पाद बनाता है। यह एक उत्पाद सुइट है जिसमें एक सरकारी संगठन की दिन-प्रतिदिन की आधिकारिक कार्य-संबंधी गतिविधियों को बदलने के लिए कई एप्लिकेशन शामिल हैं। कागज, समय और पैसे की बचत उत्पादकता में वृद्धि, डेटा सुरक्षा एवं अखंडता (इंटीग्रीटी), पारदर्शिता और जवाबदेही और त्वरित निर्णय सुनिश्चित करने हेतु ई-ऑफिस की आवश्यकता महसूस की गयी थी।

ई-ऑफिस के प्रमुख घटक इस प्रकार हैं:-

1. फाइल प्रबंधन प्रणाली (ई-फाइल) : फाइलें सरकारी प्रक्रियाओं का एक अभिन्न अंग हैं। इसमें फाइलों का निर्माण, फाइल में टिप्पणी, विभिन्न स्तरों पर निर्णय लेना, पत्रों और अधिसूचनाओं के माध्यम से निर्णय जारी करना शामिल है। यह एक कार्यप्रवाह-आधारित प्रणाली है जो एक अधिक

कुशल इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली के साथ-साथ फाइलों की मौजूदा भौतिक रख रखाव की सुविधाओं का विस्तार करती है। इस प्रणाली में विभिन्न उप-मॉड्यूल शामिल हैं जो एक दस्तावेज डाक के पूरे जीवन चक्र के आधिकारिक वर्कफ्लो को प्रबंधित करने के लिए उस समय से जुड़े हुए हैं जब यह संगठन द्वारा प्राप्त किया जाता है जब तक इसे कार्यों के उचित सेट के साथ निपटाया जाता है। इसमें एक फाइल में काम करने के सभी चरण शामिल हैं, जिसमें स्कैनिंग, इलेक्ट्रॉनिक डायरीकरण, फाइल निर्माण, नोटिंग निर्माण, नोटिंग और ड्राफ्ट पर डिजिटल हस्ताक्षर, प्रेषण, तेजी से प्रसंस्करण और फाइलों और रसीदों की आवाजाही, फाइलों और रसीदों को बंद करना और अंत में अभिलेखों का अभिलेख शामिल है।

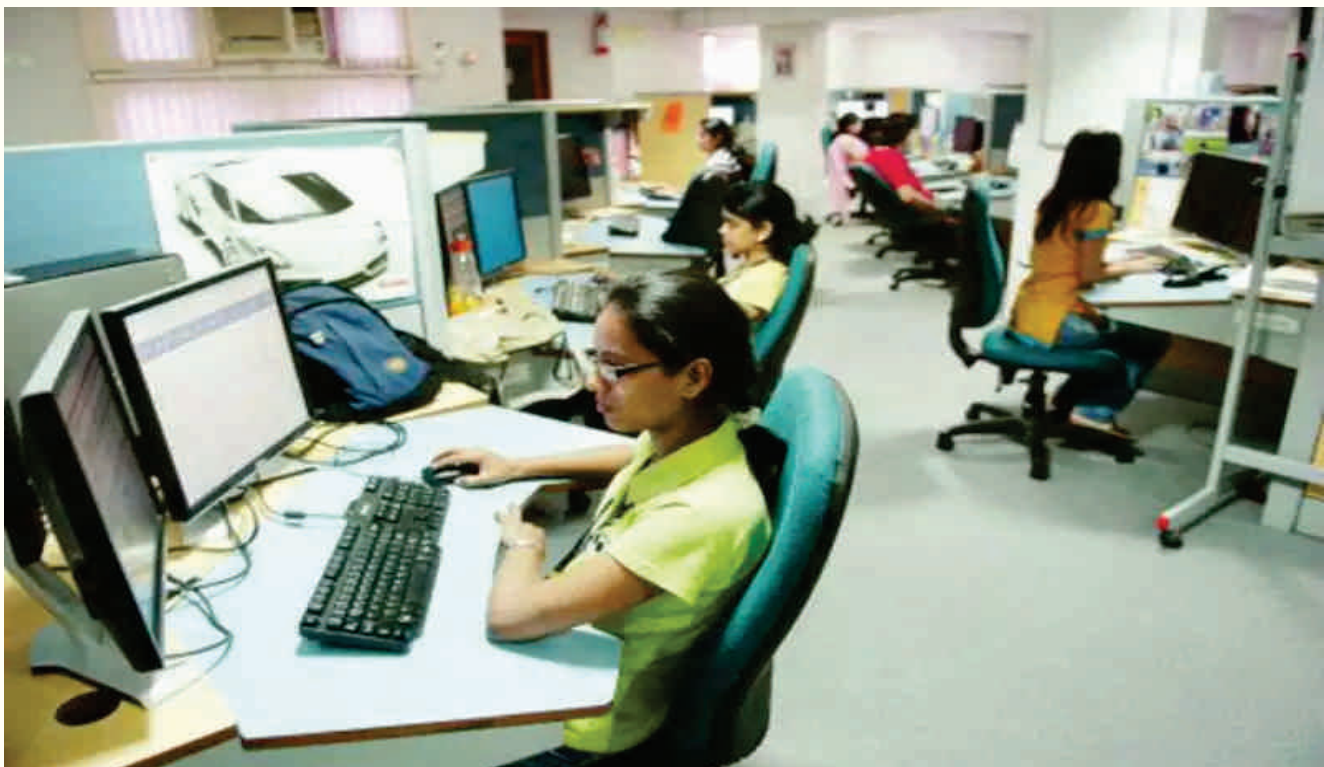
इसके अंतर्गत कार्य निष्पादन की प्रक्रिया निम्नवत है :-

सबसे पहले आनेवाले पत्र को स्कैन करके उन्हें किसी लोकल ड्राइव (सी ड्राइव को छोड़कर) में

सेव किया जाता है। तत्पश्चात इसे ब्राउज करके अपलोड किया जाता है। मेटा डाटा भरने के बाद इसे डायरीकरण किया जाता है। तदनुसार सिस्टम ई प्राप्ति हेतु एक क्रमिक डायरी संख्या बनाता है। ई प्राप्ति को संबन्धित उपयोगकर्ता को प्रेषित कर दिया जाता है जिसके निष्पादन हेतु निम्न दो में से कोई एक प्रक्रिया अपनाई जाती है:

- (i) मौजूदा ई फाइल में डालें या
- (ii) कोई नया ई फाइल बनाकर मेटा डाटा भरें। सिस्टम एक ई फाइल संख्या बनाता है।

अब ई फाइल को खोलकर उसमें नोटिंग, ड्राफ्ट एवं पत्राचार के संदर्भ में नोटिंग शुरू किया जाता है। ड्राफ्ट बनाकर उसे संपादित किया जा सकता है, अनुमोदित कर ड्राफ्ट जारी करते हुए डिजिटली साइन करके अगले उपयोगकर्ता को भेज दिया जाता है। सिस्टम में सबमिसन के चैनल के माध्यम से ई फाइल संचालित होती है। अंततः निर्णय दर्ज करने के उपरांत अनुमोदित ड्राफ्ट अथवा पत्र को ई मेल / डाक द्वारा भेज दिया जाता है।



ई-ऑफिस पोर्टल के दो महत्वपूर्ण भाग हैं:-

(i) ज्ञान प्रबंधन प्रणाली (केएमएस):

ई-ऑफिस के केएमएस घटक ने एक संगठन में दस्तावेजों के केंद्रीय भंडार की अवधारणा को सामने लाया। यह उपयोगकर्ताओं को वर्कफ्लो में इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज बनाने और प्रबंधित करने के साथ-साथ संस्करण (ट्रैकिंग इतिहास) प्रदान करता है जिसे आसानी से देखा जा सकता है, खोजा जा सकता है, साझा किया जा सकता है और प्रकाशित किया जा सकता है। यह सामग्री को तार्किक रूप से व्यवस्थित करता है और एक संगठन में सामग्री निर्माण और प्रस्तुति को मानकीकृत करता है। यह ई गवर्नेंस की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जिसमें सरकारों को बड़ी मात्रा में दस्तावेजों जैसे - नीतियां, प्रपत्र, अधिनियम और विनियम, परिपत्र, दिशानिर्देश और मानक, नियमावली आदि का प्रबंधन करना पड़ता है। यह एक भंडार बनाने में मदद करता है जहां सभी मंत्रालय और विभाग फाइलों तक पहुँच बना सकते हैं।

(ii) सी ए एम एस (सहयोग और संदेश सेवा): ई-ऑफिस सुइट के हिस्से के रूप में विकसित किया गया। यह उत्पाद संचार और वास्तविक समय में जानकारी साझा करने की सुविधा प्रदान करता है। यह ओपन आर्किटेक्चर का उपयोग करता है जो विभिन्न ई-ऑफिस सेवाओं के एकीकरण को सक्षम बनाता है।

स्मार्ट परफॉर्मेंस अप्रेजल रिपोर्ट रिकॉर्डिंग ऑनलाइन विंडो (स्पैरो): यह वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (ए पी ए आर) के प्रसंस्करण के लिए एक वेब-आधारित अनुप्रयोग है। कर्मचारी अपना एपीएआर भर सकते हैं, जिसे आगे आधिकारिक पदानुक्रम द्वारा रिपोर्ट और समीक्षा की जाती है। यह एपीएआर की प्रस्तुति और प्रसंस्करण में देरी को कम करने में मदद करता है और एपीएआर के संचालन को ट्रैक करके पारदर्शिता

सुनिश्चित करता है। सिस्टम एक डैशबोर्ड सुविधा भी प्रदान करता है जो सेवा नियंत्रण प्राधिकरण को स्थिति की निगरानी करने में सक्षम बनाता है जैसे अधिकारियों की पोस्टिंग, विभिन्न स्तरों पर लंबितता और एपीएआर संसाधित और बंद करना।

कार्मिक सूचना प्रबंधन प्रणाली (पी आई एम एस) : यह कर्मचारियों के विवरण को बनाए रखने में मदद करती है। इनमें पहचान, कौशल सेट, संपर्क विवरण, पोस्टिंग, नामांकन, ऋण, वेतन विवरण आदि शामिल हैं।

ई ऑफिस का वर्क फ्रॉम एनिव्हेयर (डब्ल्यू ए डबल्यू) पोर्टल कहीं से भी आभासी कार्यालय के लिए एक प्रवेश द्वार के रूप में कार्यालय के कार्यों के लिए वन स्टॉप-पोर्टल है। यह अधिकारियों को कहीं से भी सुरक्षित रूप से अपने कार्यालय का कार्य निपटाने के लिए सुविधा प्रदान करता है।

ई-ऑफिस वेबसाइट पर उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार, वर्तमान में केंद्र सरकार के लगभग 356 कार्यालय विभाग एवं मंत्रालय और विभिन्न राज्य सरकारों के 311 विभाग मंत्रालय सहित कुल 667 ग्राहक हैं जो ई-ऑफिस सूट का उपयोग कर रहे हैं। यह संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है।

निष्कर्षतः ई ऑफिस प्रणाली से पारदर्शिता बढ़ेगी और भ्रष्टाचार पर लगाम लगेगी। एक बार सभी अधिकारी कर्मचारी इसमें प्रशिक्षित हो जाएंगे तो यह आसान लगने लगेगी। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि कम समय में अधिक काम निपटाए जा सकते हैं। इसलिए अधिकारियों/कर्मचारियों को इसका प्रशिक्षण गंभीरता के साथ लेना होगा। विभागाध्यक्षों को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिलवाना सुनिश्चित करना होगा।

(नोट: यह निबंध इंटरनेट से संग्रहित सामग्रियों पर आधारित है।)

ओ. आई. ओ. एस.- एक सफरनामा



✍ सुभाष वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हाल के दशकों में भारत सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा डिजिटल क्रांति के जरिए जनता को पारदर्शी तरीके से एवं समय-सीमा के अंदर सरकारी सेवाओं का लाभ बेहतर तरीके से पहुंचाने हेतु ई-गवर्नेंस की अवधारणा का विकास किया गया है। इसी तारतम्यता में भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग द्वारा बदले सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश एवं उसके अनुरूप सरकार की बदलती कार्यशैली के आलोक में लेखापरीक्षा की परंपरागत कार्य प्रणाली के बदले एक ऐसी लेखापरीक्षा कार्य प्रणाली की आवश्यकता महसूस की जा रही थी जो इस बदले परिवेश में अपने संवैधानिक दायित्वों का और अधिक दक्षता एवं पारदर्शिता से निर्वहन कर सके तथा कम और वास्तविक समय (Real time) में अधिक कुशलता से एवं प्रभावी तरीके से लेखापरीक्षा कर सके। भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग में ओआईओएस (OIOS) का प्रादुर्भाव इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति के रूप में सामने आया।

ओआईओएस, भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग की एक अत्यंत महत्वाकांक्षी एवं बड़ी परियोजना है तथा लेखापरीक्षा कार्यकलापों के लिए यह एक नए युग का प्रारंभ है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि ओआईओएस (one IAAD one system) के रूप में एक ऐसे समग्र तंत्र का विकास किया गया है जिसमें लेखापरीक्षा संबंधी विभिन्न प्रक्रियाएं यथा-लेखापरीक्षा योजना, लेखापरीक्षा जगत तैयार करना एवं सभी प्रकार की लेखापरीक्षा गतिविधियों एवं उनके प्रतिवेदनों का स्वरूप सभी लेखापरीक्षा कार्यालयों में एक ही प्रकार की एकीकृत व्यवस्था के अंतर्गत संचालित हों। अंग्रेजी में एक कहावत है “Rome was not built in a day” इसी प्रकार से ओआईओएस

एस० का भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग में क्रियान्वयन भी एक दिन की घटना नहीं है। दशकों से चली आ रही परंपरागत कार्यशैली को एक बिल्कुल नए वातावरण में परिणत करना अत्यंत दुष्कर कार्य था। निश्चित रूप से एक विशाल कार्यबल को परंपरागत कार्यपद्धति से एक बिल्कुल नए वातावरण में लेखापरीक्षा कार्य करने हेतु प्रेरित करना एक अत्यंत कठिन कार्य था, परंतु विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उत्साह, कर्मठता एवं परिश्रम ने इसे साकार कर दिया। ओआईओएस को हमारे कार्यालय में अत्यंत सुनियोजित एवं चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वयन किया गया। प्रथम चरण में मास्टर डाटा (Master Data) एवं लीगेसी (Legacy Data) को तैयार किया गया है। मास्टर डाटा में कार्यालय के आधारभूत डाटा संग्रह को तैयार किया गया, जिसमें कार्यालय संरचना डाटा (Office structure data), लेखा परीक्षा जगत (Audit Universe master data), कर्मिकों का डाटा (Employee data) भी शामिल था। इसके पश्चात् सभी लेखापरीक्षा प्रबंधन समूहों/अनुभागों द्वारा लीगेसी डाटा (विगत 3 वर्षों के निरीक्षण प्रतिवेदन एवं लेखापरीक्षा आपत्तियों का डाटा बेस) तैयार किया गया। ओआईओएस के इन आधारभूत कार्यों के सफल कार्यान्वयन ने इस पूरे कार्यालय के कार्यबल को आवश्यक कौतूहल एवं उत्साह प्रदान किया एवं उनमें ओआईओएस पर कार्य किए जाने को लेकर उत्सुकता प्रदान की। इन सबमें जो सबसे

महत्वपूर्ण बात थी वो यह थी कि उच्च स्तर से कार्यालय के कार्यबल को लगातार ऑनलाइन एवं ऑफलाइन तरीके से प्रशिक्षण दिया जा रहा था ताकि वे ओ0आई0ओ0एस0 एवं इससे जुड़ी विभिन्न प्रक्रियाओं को सहजता से आत्मसात् कर सकें। द्वितीय चरण में क्षेत्रदलों को ओ0आई0ओ0एस0 तंत्र पर लेखापरीक्षा करने हेतु प्रेरित किया गया तथा भेटिंग अनुभागों को भेटिंग का कार्य ओ0आई0ओ0एस0 पर करने हेतु प्रेरित किया गया। यह एक दूरदर्शी, चरणबद्ध एवं उच्चस्तरीय क्रियान्वयन योजना का ही परिणाम था कि इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने काफी कम समय में ओ0आई0ओ0एस0 पर लेखापरीक्षा कार्य एवं भेटिंग का कार्य करना शुरू कर दिया था।

हमारा कार्यालय, ओ0आई0ओ0एस0 को आत्मसात् कर उस पर कार्य करने के मामले में अग्रणी कार्यालय बना। ओ0आई0ओ0एस0 के क्रियान्वयन की आशातीत सफलता को देखकर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा दिनांक 01.04.2023 से समस्त लेखापरीक्षा कार्य पूर्ण रूपेण ओ0आई0ओ0एस0 पर करने का निर्णय लिया गया। जिसे हमारे कार्यालय द्वारा पूरे हर्षोल्लास के साथ अंगीकृत किया गया है। इस क्रम में दिनांक 11.04.2023 से दिनांक 13.04.2023 की अवधि में इस कार्यालय में एक त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया ताकि कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी लेखापरीक्षा के विभिन्न पहलुओं पर ओ0आई0ओ0एस0 का कार्य, कुशलता पूर्वक एवं पूर्ण समग्रता के साथ कर सकें। प्रशिक्षण शिविर में इस कार्यालय हेतु नामित हेल्प डेस्क अधिकारी श्री अनुराग श्रीवास्तव ने इस कार्यालय में (DP processing on) ओ.आई.ओ. एस. पर डीपी प्रोसेसिंग, ओ. आई.ओ.एस. पर प्रतिवेदन से संबंधित कार्य, ओ. आई.ओ.एस. पर क्यू.ए./क्यू.सी., ओ.आई. ओ.एस. पर बाह्य संपोषित परियोजना, ओ.आई.ओ. एस. पर मुख्यालय अनुभाग का कार्य, ओ.आई.ओ. एस. पर क्षेत्रदल द्वारा लेखापरीक्षा कार्य से संबंधित विभिन्न बारीक पहलुओं से कार्यालय के अधिकारियों



एवं कर्मचारियों को अवगत कराया ताकि ओ0आई0ओ0एस0 पर वे लेखापरीक्षा एवं इससे जुड़े कार्यों को सहजतापूर्वक कर सकें। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण में प्रतिदिन एक **“शंका एवं समाधान सत्र”** भी रखा गया था। जिसमें कार्य करने के दौरान यदि अधिकारियों/कर्मचारियों को किसी प्रकार की व्यवहारिक कठिनाइयाँ आ रही हो तो उसका निराकरण किया जा सके। इसके अलावा श्री अनुराग श्रीवास्तव ने विभिन्न लेखापरीक्षा प्रबंधन समूहों एवं अनुभागों द्वारा ओ0आई0ओ0एस0 पर कार्य के दौरान हो रहे कठिनाइयों पर जिसे डाटा विश्लेषणीय समूह द्वारा समेकित किया गया था, उस पर भी विंदुवार चर्चा किया तथा उन समस्याओं के निराकरण प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया। ओ0आई0ओ0एस0 पर आयोजित इस प्रशिक्षण शिविर से हमारे कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण काफी लाभान्वित हुये हैं तथा वे लेखापरीक्षा कार्य शत प्रतिशत ओ0आई0ओ0एस0 पर करने के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु कटिबद्ध हो गए हैं। इस प्रकार से कार्यालय ने ओ0आई0ओ0एस0 के विभिन्न सोपानों को सफलतापूर्वक पार किया एवं इस क्षेत्र में नई उँचाईयों को छूने के लिए कार्मिक तत्पर हैं। ♦

जंगल में जीवन



✍ सत्य प्रकाश सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जंगल का जीवन एक जीवंत और विविध पारिस्थितिकी से भरा तंत्र है। यह एक जादू और आश्चर्य की दुनिया है, जहां हर जीवित प्राणी को प्रकृति के नाजुक संतुलन में भूमिका निभानी पड़ती है। या यह कहें कि जंगल में जीवन एक आकर्षक यात्रा है, जिसमें अस्तित्व, अनुकूलन और परस्पर जुड़ाव एक साथ मिलते हैं। यह एक रोमांचक अनुभव है, जो हमें प्रकृति के सभी रूपों का आनंद उठाने का मौका देता है। वन्यजीवन के निराले और अद्भुत संसार का आवास है जंगल। वहां विभिन्न प्रकार के पौधों, पशुओं और पक्षियों की समृद्ध विविधता दिखाई देती है। जंगल में वन्यजीवन के नैसर्गिक नियम संसाधनों को संतुलित रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जंगली जीवन का अस्तित्व एक खास अनुभव है, जो हमें वन्यजीवन के साथ एक आध्यात्मिक जुड़ाव महसूस करने का अहसास कराता है। जंगल के शांत और प्राकृतिक वातावरण में हम अपने आप को खो देते हैं और भावुकता से भर जाते हैं। वन्यजीवन के साथ हमारा आत्म-संबंध अधिक मजबूत होता है, और हम अपने प्राकृतिक अस्तित्व को महसूस करते हैं।

जंगल में जीवन के अनुकूलन का अनुभव भी होता है। वहां के प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने के लिए हर जीवन को अपने पर्याप्त खाने, रहने और संसाधनों की देखभाल करनी पड़ती है। वन्यजीवन में सभी जीवों के बीच एक विशेष सहानुभूति और संवाद का माहौल होता है, जो संसाधनों के उचित और सजीव उपयोग को सुनिश्चित करता है।

जंगल में जीवन अस्तित्व, अनुकूलन और परस्पर जुड़ाव का एक संतुलित समन्वय है, जो हमें प्रकृति

के साथ एक सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने का संदेश देता है। वहां के संतुलित जीवन और प्राकृतिक समृद्धि का साक्षात्कार करने से हमारी सृष्टि के इस सुंदर अध्याय में हमारी आत्म-सम्मान और संवेदनशीलता का विकास होता है।

जंगल एक जादुई स्थान है, जिसमें प्रकृति की सुंदरता और जीवन की लय अनूठी होती है। विभिन्न प्रकार के पक्षियों के मधुर स्वर जंगल में एक अलग चहचहाहट का वातावरण पैदा करते हैं। उनके गाने की ध्वनि से जंगल में खास शांति का माहौल होता है।

पक्षियों के रंगीन पंख और विविधता भी जंगल की खूबसूरती को बढ़ाते हैं। इनके पंख हरे-भरे पत्तियों के साथ मिलकर एक रंगबिरंगा नजारा प्रस्तुत करते हैं, जो जंगल के रूपरंग को और भी खूबसूरत बनाता है। जंगल की गिलहरी, पेड़ों के शाखाओं पर तेजी से भागने वाले पक्षी एक दृश्यमान आनंद का संकेत करते हैं। उनकी फुर्तीली उड़ान और सतरंगी दौड़ जंगल में जीवन की एक जीवंतता की छवि बनाते हैं।

जंगल में शान से घूमने वाले हिरणों का दृश्य भी दिलचस्प होता है। इन शांतिपूर्वक चरने वाले सर्वांगसुंदर जानवरों की शोभा भी जंगल की रमणीयता को बढ़ाती है।

जंगल के प्रत्येक कोने में जीवन की लय स्पंदित होती है। जंगल में हर पल कुछ नया होता है, और प्रकृति अपनी खिलखिलाहट के साथ नये रंग और



सौंदर्य का प्रदर्शन करती है। वहां के प्राकृतिक वातावरण में जीवन का उत्साह, खुशी, और अनंत समृद्धि छुपी होती है, जो हर व्यक्ति को अपने कोने में बुलाती है। जंगल के जीवन का यह विविधता भरा समृद्ध वन्यजीवन हमें प्रकृति और संस्कृति से जुड़े रहने, और उसकी संरक्षण की जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता को समझाता है। इस जंगली जीवन का सम्बन्ध हमारे अस्तित्व और संतुलन से है, और हमें इसे संरक्षित रखने के लिए अपना योगदान देना चाहिए।

जंगल के निवासियों के लिए, रोजगार की तलाश और सुरक्षा की चिंता एक महत्वपूर्ण पहलू है। जंगल में अनेक प्रकार के जीव होते हैं, जिनमें बाघ, सिंह, शेर, चीता आदि शिकारी जीव शामिल होते हैं, जो अपने शिकार को पकड़ने में विशेषज्ञ होते हैं। इसके साथ ही, जंगल में कई शाकाहारी जीव भी पाए जाते हैं जैसे कि हिरण, नीलगाय, बंदर, खरगोश आदि जो पत्तियों, फलों और घास के आहार

पर जीवन यापन करते हैं।

प्राकृतिक संतुलन जीव-जंतुओं के लिए महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह संतुलित पारिस्थितिकी और प्राकृतिक वातावरण की देखभाल रखने में मदद करता है। इससे एक संघटित जीव समुदाय जंगल के एक संतुलित विकास का हिस्सा बना रहता है। शिकारी जीव शिकार की आबादी को नियंत्रण में रखते हैं ताकि शिकार की अत्यधिक प्रचुरता से जंगली संरचना पर बुरा असर न पड़े। अगर इन शिकारी जीवों की आबादी अधिक हो जाती है तो ये जंगली जीव मानव समुदाय के लिए क्षति का कारण बन सकते हैं।

जंगली जीवों के प्राकृतिक शिकार और खाने के स्रोतों का ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण है। अधिक बाघ, सिंह, शेर या चीता जैसे शिकारी जीवों की आबादी बढ़ने से, उन्हें पर्याप्त खाने की आपूर्ति सुनिश्चित नहीं होगी और इससे उनके प्राकृतिक संतुलन पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

जंगल में जीवन बिताने वाले शाकाहारी जीवों का भी अपना अनूठा स्थान होता है। ये जीव जंगल के अन्य संरचनाओं को सुविधाजनक ढंग से बनाने और इनके बीच संबंधों को संभालने में मदद करते हैं। उनके द्वारा जंगल के वृक्षों के बीज और फलों के बीच वितरण करने से भी जंगल का प्राकृतिक संतुलन स्थिर रहता है।

जंगली जीवों का जीवन जीने का तरीका अनूठा होता है और इनका संबंध प्रकृति से गहरा होता है। इन जीवों को संरक्षित रखने और उनके साथ संबंधों को समझने के लिए हमें प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। यह न केवल जंगल के निवासियों के लिए बल्कि पूरे पृथ्वी के लिए महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से हम संसाधनों को सुरक्षित रख सकते हैं और जंगली जीवों के साथ एक संतुलित और समृद्ध सम्बन्ध बना सकते हैं।

जंगल पौधों और पेड़ों की अनगिनत प्रजातियों का आश्रय स्थल है। ऊँचे-ऊँचे पेड़, जिनकी शाखाएँ आकाश की ओर पहुँचती हैं, असंख्य प्राणियों को आश्रय और छाया प्रदान करते हैं। सबसे छोटे कीड़ों से लेकर सबसे बड़े स्तनधारियों तक, सभी इन शक्तिशाली अभिभावकों के आलिङ्गन में साँत्वना और जीविका पाते हैं। पेड़, बदले में परागण और बीज फैलाव के लिए जानवरों पर भरोसा करते हैं, एक सहजीवी संबंध बनाते हैं जो जीवन को बनाए रखता है।

जंगल पृथ्वी के फेफड़ों के रूप में कार्य करते हुए, सांस लेते हैं। प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के माध्यम से, पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। जिस हवा में हम सांस लेते हैं उसे शुद्ध करते हैं। वे प्राकृतिक फिल्टर के रूप में भी कार्य करते हैं। जंगल न केवल सुंदरता और शांति का स्रोत है, बल्कि धरती के लिए जीवन रेखा भी है।



मानव गतिविधियों द्वारा संचालित वनों की कटाई, इस उल्लेखनीय पारिस्थितिकी तंत्र के नाजुक संतुलन को खतरे में डालती है। जैसे-जैसे पेड़ काटे जा रहे हैं और प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं, अनगिनत प्रजातियाँ विलुप्त होने का सामना कर रही हैं। जलवायु परिवर्तन इन खतरों को और बढ़ा देता है, मौसम के पैटर्न को बदल देता है और पौधों और जानवरों दोनों के अस्तित्व को प्रभावित करता है।

वनों का संरक्षण और सुरक्षा न केवल एक पर्यावरणीय अनिवार्यता है बल्कि एक नैतिक जिम्मेदारी भी है। संरक्षण के प्रयास, स्थायी प्रथाएं और जिम्मेदार पर्यटन भावी पीढ़ियों के लिए इन अमूल्य पारिस्थितिक तंत्रों को सुरक्षित रखने में मदद कर सकते हैं। वनों के महत्व के बारे में शिक्षा और जागरूकता व्यक्तियों और समुदायों को कार्रवाई करने और प्राकृतिक दुनिया के प्रबंधक बनने के लिए प्रेरित कर सकती है।

जंगल में जीवन प्रकृति के चमत्कारों का एक उपहार है। यह हमें सभी जीवित प्राणियों के परस्पर जुड़ाव, सद्भाव और सह-अस्तित्व की आवश्यकता की याद दिलाता है। आइए हम यह सुनिश्चित करते हुए इसकी सुंदरता को बनाए रखने का प्रयास करें ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए धरती पर सुंदर जीवन लगातार फलता-फूलता रहे। ♦

कदम



✍ जयप्रकाश मल्ल
सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

असर जहर का गहरा होता,
बदन नशे के घेरे में है।
किरणे भी तो कौंध रहीं हैं,
गर पथ सभी अंधेरे में है ॥

उम्मीदों ने बांधा संबल,
कदम सधे औ पथ पर ही हैं।
शौर्य, सोच, साहस की सीमा,
मंजिल—मंजिल बनी रही है ॥
कवि की इच्छा शब्द को फेरे,
कैसे तुक को छंद में घेरे।
संवेदन औ भाव घनेरे,
चिंतन अपने चित्र उकरे ॥

धुप्प अंधेरी काल कोठरी,
रौशनी ने सुराख किया है।
नैतिकता का ताना बाना,
फिर से चादर तान दिया है ॥

अवसर अपनी शक्ति बना लो,
अंतर्द्वंद को दिशा दिखा दो।
मंजिल शायद मिल जाएगी,
अगर डगर पर कदम बढ़ा लो ॥



(श्री मल्ल 'प्रहरी' पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य के रूप में भी योगदान दे चुके हैं)

स्वास्थ्य साक्षरता वर्तमान समय की जरूरत



✍ रविकांत पटेल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वास्थ्य ही अनमोल धन है एवं स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है। यह मुहावरा हम सभी ने सुना है, परंतु बहुत कम लोग इसे समझ पाते हैं। वर्तमान भौतिकवादी युग में लोगों के पास अपने शरीर को तंदुरुस्त रखने के लिए जहां समय का अभाव है वहीं रहन-सहन तथा खान-पान की फास्टफूड शैली ने 'एक तो करेला उस पर नीम चढ़ा' कहावत को चरितार्थ कर दिया है। कोरोना की विपदा में यह पाया गया कि जो लोग शारीरिक रूप से स्वस्थ थे, जिनकी शारीरिक प्रतिरक्षण प्रणाली मजबूत थी वे कोरोना से जल्दी उबर गए। उस विपदा के समय जिसने जो कहा खाने के लिए वो खा कर लोग अपने शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत कर रहे थे। कोरोना ने लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने के लिए सजग कर दिया है।

भारत जैसे विशाल देश में लगभग 140 करोड़ की आबादी के लिए उन्नत और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध करना किसी भी सरकार के लिए असंभव-सा है। विकसित देशों में भी कोरोना के समय लाखों लोग काल कालवित हुये। उन देशों की स्वास्थ्य सेवाएँ भी चरमरा गई थी। इससे स्पष्ट है कि हमारी सरकार स्वास्थ्य साक्षरता को लोगों के बीच प्रसारित कर ही विशाल जनसंख्या को स्वस्थ रख सकती है। प्रगति के बावजूद, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच भारत में कई लोगों के लिए सीमित है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। स्वास्थ्य साक्षरता स्वास्थ्य देखभाल के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा कर सकती है। अनेक बीमारियों की पहचान पहले हो जाए तो उसे समय रहते ठीक किया जा सकता है। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को कुछ अंतरालों पर उम्र के अनुसार निवारक शारीरिक जांच कराते रहना

चाहिए। सरकार को इन जाँचों की गुणवत्ता और लागत पर नियंत्रण रखते हुये व्यवस्था करनी चाहिए। ये निवारक जांच बीमारियों पर बढ़ते लागत, जो संसाधनों और दवाइयों पर व्यय होती है, उसको कम करेगा।

शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए,



हमें नियमित व्यायाम करना, स्वस्थ आहार खाना, पर्याप्त नींद लेना और तंबाकू, अत्यधिक शराब और दवाओं का सेवन सीमित करना चाहिए। योग, मेडिटेशन और स्वास्थ्यप्रद व्यस्त जीवनशैली अपनाना भी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में मदद कर सकता है। स्वास्थ्य साक्षरता के द्वारा लोगों को योग, व्यायाम, संतुलित आहार, आहार के सस्ते विकल्प तथा स्वस्थ जीवन शैली के प्रति लोगों को जागरूक किया जा सकता है।

हमारा मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक

स्वास्थ्य एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं और दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव होता है। अगर हम स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो हमें अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक है।

मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल के लिए, हमें स्ट्रेस को प्रबंधित करना, सकारात्मक सोच विकसित करना, सामाजिक संबंधों को सुधारना और मनोरंजक गतिविधियों के लिए समय निकालना चाहिए। मानसिक तनाव को कम करने के लिए मनोरंजन और संगीत का भी उपयोग किया जा सकता है।

इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवाओं को समझना और उनका उपयोग करना भी महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य साक्षरता हमें अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने, स्वास्थ्य समस्याओं को रोकने और अपने स्वास्थ्य के बारे में बेहतर निर्णय लेने के लिए तैयार करती है। इसके लिए, हमें स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को समझने, स्वास्थ्य जानकारी को समझने और स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने वाले के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए कौशल और ज्ञान होना आवश्यक है। स्वास्थ्य साक्षरता को बढ़ाने के लिए, हमें स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ानी चाहिए और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए समर्पित संसाधनों को मजबूत करना चाहिए।

स्वास्थ्य साक्षरता महत्वपूर्ण है क्योंकि कम स्वास्थ्य साक्षरता को खराब स्वास्थ्य परिणामों, उच्च लागत और उच्च जोखिम से भी जोड़ा गया है। इसलिए स्वास्थ्य साक्षरता में सुधार करना व्यक्तियों और समुदायों के साथ-साथ संपूर्ण स्वास्थ्य प्रणाली के लिए एक महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य साक्षरता पर किया गया व्यय अंततः कम लागत को सुनिश्चित करता है और मानव बल की रक्षा करता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

औरत



✍ अताउल्ला हुसैन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(तदर्थ)

वो बेटियां हैं
बहनें हैं, बीबियाँ हैं
और माएं हैं

वो ज़ज्ब हो जाती हैं
पसमंजर में
और
पसमंजर
ज़ज्ब हो जाता है उनमें

इसलिए
हर तरफ दिखते हैं
बेटे, भाई, बाप वगैरह ।

शब्दार्थ
ज़ज्ब— समाहित
पसमन्जर — पृष्ठभूमि



माँ



अभिषेक

अनंत वेदना को सहकर जो
जननी का स्वरूप पाती है
वो माँ कहलाती है

गम के हर दरिया को समेट
सुख का सागर बन जाती है
वो माँ कहलाती है

संघर्ष की अगन में तपकर भी
जीने का सबक सिखाती है
वो माँ कहलाती है

सब खताओं को भूल कर
करुणा का गागर छलकाती है
वो माँ कहलाती है

निज स्वार्थ से परे रहकर
ममता का धर्म निभाती है
वो माँ कहलाती है

वसुधा सी विशाल होकर
सबको हृदय में बसाती है
वो माँ कहलाती है

बेखबर हो, अपनी क्षुधा से
बच्चों का पेट भर जाती है
वो माँ कहलाती है

तपिश भरी लंबी निशा में
शीतलता का आभास कराती है
वो माँ कहलाती है

जीवन-रण के हर क्षण में
दुआओं का कवच पहनाती है
वो माँ कहलाती है



खुद गरल घूंट पी कर भी
आँचल से सुधा बरसाती है
वो माँ कहलाती है
लफ्जों में जो न समाती है
अपरिभाषित ही रह जाती है
वो माँ कहलाती है।

द्वारा— राधेश्याम प्रसाद

सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

उम्र की बाधा और मन की अभिलाषा



✍ मनोज कुमार न० 6
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

शाश्वत है कि बचपन की बहुत सारी अभिलाषा पूरी नहीं होती, अधिकतर धन के अभाव में तो कुछ अवसर और समय की उपलब्धता के अभाव में दबी रह जाती है, और व्यक्ति बचपन में मिले स्वर्गिक आनंद उठाते हुए जवानी के दहलीज पर आ पहुंचता है। मध्यम वर्गीय परिवार के जवानी का एक ही आशय होता है नौकरी यानी अर्थोपार्जन करना। व्यक्ति की अभिलाषायें सिमट जाती हैं और नौकरी की तैयारी शुरू हो जाती है। नौकरी मिलते ही शादी और बेहतर आय बढ़ाने के अवसर को हासिल करने के लिए विभागीय परीक्षाओं के पीछे की दौड़ शुरू होती है। साथ-साथ जमीन, प्लैट, बच्चे की पढ़ाई और उनको पूरी करने में अपने बचपन की इच्छायें धीरे धीरे दफन होती जाती हैं, पर कुछ जो इच्छाएं थोड़ी दिल के करीब होती हैं उसे किसी और को करते देख बार-बार इच्छाएँ उठती हैं। पैसे का अभाव तो नहीं पर उम्र का लिहाज भी सामने आ जाता है। साथ ही साथ चार लोग क्या कहेंगे और शारीरिक क्षमता की मजबूरियाँ एवं इस उम्र तक हड्डियाँ भी पूरी तरह परिपक्व होकर लचीलापन खो चुकी होती हैं। इसके टूटने का डर, चोट लगने का डर इच्छा को परवान नहीं चढ़ने देता है। मेरी भी अनेकों इच्छा में एक स्केटिंग सीखना था। जो कहीं अंदर उम्र के साथ बलवती होती जा रही थी। जब भी बच्चों को स्केटिंग करते देखता तो मेरा भी दिल मचलने लगता और बरबस ही कदम रुक जाते, उनके पैरों के रफ्तार को रुक कर देखने लगता। पर, कभी उम्र का डर, चोट लगने का डर, कभी बच्चों की जिम्मेदारी, ऑडिट और ऑफिस की जिम्मेदारी, स्केटिंग के इच्छा को सिर उठाने नहीं देती थी लेकिन किसी को चलाते देख स्केटिंग की

अभिलाषा फिर मजबूती से खड़ी हो जाती थी। उम्र के इस पड़ाव का मनोवैज्ञानिक दबाव और स्केटिंग की अभिलाषा दोनों का द्वंद-युद्ध अंदर चलता रहता था। इधर कुछ महीने पहले प्रभात भ्रमण के दौरान बच्चों को स्केटिंग करते देख फिर कदम रुक गए और मैं आनंद लेने लगा। तभी मैंने एक युवक को देखा जो बच्चों को स्केटिंग के बारे में ही प्यार से इंस्ट्रक्शन दे रहा था। मैं समझ गया वो स्केटिंग मास्टर है। मैंने उनसे बात की और पूछा क्या भाई, मैं भी सीख सकता हूँ क्या? उन्होंने मुझे देखा और कुछ देर देखने के बाद कहा क्यों नहीं सर!

मैंने पूछा कितना वक्त लग जायेगा? उन्होंने फिर देखा और कहा दो से तीन महीने में आप चलाना सीख जाएंगे। दिल में जो सबसे बड़ा डर था वो गिरने और हड्डियों के टूटने का था। मैंने पूछा गिरेंगे तो नहीं? उन्होंने कहा गिरेंगे तो जरूर पर मेजर इंजुरी नहीं होगी। मुझे उनकी बातों से ज्यादा अपने डर पर विश्वास था और इधर स्केटिंग का मोह अंदर से बच्चों की तरह जोर जोर से चिल्ला रहा था मुझे सीखना हैं ! मुझे सीखना है ! मुझे स्केटिंग चलाना है ! आखिर स्केटिंग के मोह ने डर पर थोड़ी देर के लिए विजय पा लिया और सर के आश्वासन पर मैंने सोचा अभी फील्ड में पोस्टिंग है नहीं, तीन महीने की ही बात है सीख गया तो वाह ! वाह ! नहीं सीखा तो अफसोस नहीं रहेगा की कोशिश नहीं की। मैंने सर से पैसे की बात की और कहा सर सारा सामान आपको ही लाना है। जो बातें तय हुईं उसके

अनुसार सर को उसी समय पैसा भीम ऐप से ट्रान्सफर कर दिया। ऑनलाइन भुगतान ऑप्शन का भी सहयोग रहा नहीं तो बात फिर लटक जाती। शनिवार को बात और रविवार को सर ने सारा किट नीगार्ड, एल्बो गार्ड, हेलमेट, स्केटिंग शूज आदि लाने का वादा किया। जोश में तो मैंने पेमेंट कर दिया पर उम्र की बाधा, चोट लगने का डर, खास कर हड्डी टूटने का डर अंदर ही अंदर मुझे कमजोर कर रहा था। सर ने भी मेरी उमर जानने के बाद बोला आज से पहले आपकी उम्र के किसी भी आदमी को हमने नहीं सिखाया है। मेरा डर और भी बढ़ता जा रहा था। लेकिन सोचा की गिरने का डर तो बचपन से साथ-साथ चला आ रहा है। खतरा पैदल चलने, बाइक सीखने, कार सीखने और चलाने में भी है फिर भी मैंने सीखा और डर तो आज भी है।

“इंसान है तो है डर, डर है तो सावधानी है, सावधानी है तो कुछ भी सीखना आसान है। और सीखते हुए गिरने में हमारी हार नहीं, कि हम इंसान हैं भगवान नहीं”।

कहते हैं ना अगर मन की करनी है तो मन अपने पक्ष में ढेरों दलील देता है और अपनी मन की मनवा ही लेता है। वही हुआ, फिर मैंने तय किया कि कुछ दिन सीखेंगे अगर संतुलन बन गया तो ठीक वरना छोड़ देंगे। ये भी तय किए की तबतक किसी को कुछ नहीं बताएंगे न घर में न ही बाहर। इच्छा केवल यही थी कि बस बैलेंस बना कर धीरे-धीरे दबी हुई चाहत को साकार करें और स्केटिंग का आनंद उठा सकें। स्केटिंग एक्सपर्ट बनने की और स्केटिंग की कलाबाजी सीखने का कोई शौक नहीं था बस किसी तरह अपने मन रूपी बच्चे की जिद्द पूरी करनी थी। शनिवार इसी सोच विचार में गुजरा, रविवार एक बच्चे की तरह जल्दी सुबह 4:30 में उठ कर स्केटिंग के स्थान पर पहुंचा। थोड़ी देर में सर भी आ गए। उन्होंने सभी साजों समान मुझे दिया और मेरी ट्रेनिंग शुरू हुई। मैं विशेष सावधानी के



साथ एक अच्छे स्टूडेंट की तरह सर की बातों पर अमल करना शुरू किया और, थोड़ा बहुत गिरते पड़ते थोड़ा बैलेंस बनाया। स्केटिंग में बेंडिंग पोजीशन (bending position) का बड़ा महत्व है पर इस उम्र में ज्यादा (bend) रहने पर कमर की हड्डी कीर्तन करना शुरू कर देती थी। फिर कभी रुक कर कभी मैट पर लेट कर कमर के फ्लेक्सबिलिटी का एक्सरसाइज कर उसे ठीक करता। हर बार गिरने के बाद मन करता छोड़ दे पर दिल था कि मानता नहीं था। इस दर्द भरे समय में आइस पैड और होमियोपैथिक दवा आर्निका माउंट ने बहुत साथ निभाया। सुबह शाम आइस पैड से दर्द को सेंकता, दिन में ऑफिस, शाम में बच्चों को ट्यूशन छोड़ना-लाना और फिर सुबह की पहली किरण के साथ वही ट्रेनिंग शुरू! किसी तरह एक हफ्ता में मैंने एक महीने का संतुलन बनाया इसमें थोड़ी मेरी जिद्द, थोड़ा योग और व्यायाम जो मैं पहले से करता था और स्केटिंग मास्टर श्री विश्वजीत जी का अनुभवी मार्गदर्शन और जो बच्चे सीखते थे उनका भरपूर प्यार मिला। जिससे मैंने गिरते पड़ते और संभलते 15 दिन में स्केट रोल्ल करना सीख लिया। अब मनोबल आसमान छूने लगा। अब बारी थी हाई स्पीड व्हील लगने की।

हाई स्पीड व्हील अरे बाप रे बाप! चलाना तो दूर खड़ा होना भी मुश्किल। कब पीछे का व्हील फिसल जाए और आप सीधे जमीन पर और चोट तो लगना ही है। तीन चार दिन तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। थोड़ी देर चले और गिरना तय! चोट ने पुनः सोचने पर मजबूर कर दिया। सोचा कि स्केटिंग का सफर अब यहीं समाप्त हो गया क्योंकि अब चोट सताने लगी थी, ख्वाहिश कमजोर पड़ती जा रही थी। मैंने सर से कहा अब मैं छोड़ दूंगा। गनीमत यह थी कि मैंने ना ही घर में ना ही बाहर में किसी को कुछ बताया था। दिल के कोने में कहीं ना कहीं ऐसा लगता था कि बैलेंस धीरे-धीरे हो जाएगा पर गिरने और चोट लगने की भी चिंता सता रही थी। आखिर एक सप्ताह में हाई स्पीड व्हील को समझा बुझा कर अपना दोस्त बनाया। धीरे-धीरे हाई स्पीड व्हील पर भी बैलेंस होने लगा और मैं स्केटिंग को इंजॉय करने लगा। मकसद केवल आराम से आनंद उठाते हुए स्केट करना था, स्केटिंग की कलाबाजी और एक्सपर्ट बनने की कोई इच्छा नहीं थी। किसी तरह एक महीना बीतते-बीतते मैं थोड़ा बहुत चलाने लगा था। अब इच्छा थी कि घरवालों को बता दें। मैंने फेसबुक का और व्हाट्सएप का सहारा लिया। एक छोटा सा रील बनाया और उसे पोस्ट कर दिया। घर में बच्चे, वाइफ, रिश्तेदार और मित्रों आदि सब लोगों ने आश्चर्य और डर मिश्रित प्रतिक्रिया दी। कुछ ने व्यंग्यात्मक टिप्पणी भी की। पर अधिकांश शुभचिंतकों ने भरपूर हौसला आफजाई की। अब मैं स्केटिंग को इंजॉय कर रहा हूँ साथ में सीखने वाले बच्चे का भरपूर साथ मिल रहा है। सर का भी पूरा सहयोग मिल रहा है। इसे आनंदमय व्यायाम के रूप में मैंने अपने व्यायाम में शामिल कर लिया है। गिरता अभी भी हूँ पर डर थोड़ा कम गया है, समझ धीरे-धीरे बढ़ रही है और मजा भी आ रहा है। स्केटिंग के इतने सारे तकनीक और कलाबाजियाँ हैं कि सीखने में वर्षों लग जाए पर मुझे तो सिर्फ आनंद से

मजे ले के चलना है। ना बहुत स्पीड की तमन्ना है ना कलाबाजियाँ का। हवा को चीरते हुए एक विशेष पॉस्चर में ग्लाइड करना एक अवर्णनीय सुख देता है। कहते हैं ना बहुत लोगों के मन में इस तरह का कोई न कोई इच्छा होती है पर उम्र की बाधा के कारण अपनी इच्छाओं को दफना देते हैं। मुझे स्केटिंग करते देखकर कुछ बच्चों के पिता भी स्केटिंग सीखना शुरू कर दिए हैं। हम लोगों का अपना एक समुह बन रहा है और हम लोगों ने तय किया है कि सब लोग एक साथ 'डैडी ब्रिगेड' बन कर स्केटिंग का आनंद उठायेंगे।

आइए अपने अनुभव, विशेषज्ञ से सुनी बातें और इंटरनेट पर उपलब्ध तथ्यों के आधार पर स्केटिंग के बारे में थोड़ा जानते हैं।

रोलर स्केटिंग और रोलरब्लेडिंग (rollerblading) एक बहुत मजेदार एक्टिविटी, एक अच्छा एक्सरसाइज, एक कॉम्पिटिव स्पोर्ट अथवा ट्रांसपोर्टेशन का एक तरीका है। हम जिस रूप में चाहे अपना सकते हैं। स्केट्स की मूल रूप से तीन किस्में क्वाड रोलर स्केट्स, इनलाइन स्केट्स या ब्लेड्स हैं। रोलर स्केटिंग के लिए रोलर रिक और स्केट पार्क बनाए गए हैं, हालांकि यह सड़कों, फुटपाथों और बाइक पथों पर भी होता है। स्केटिंग विशेषज्ञ का मानना है कि 5 से 14 की उम्र तक सीखना श्रेयस्कर है पर इसे 25 से 30 वर्ष की आयु तक फिट रहने की अवस्था में थोड़ी सावधानी के साथ सीखा जा सकता है परंतु इसके बाद कठिन है। शायद इस उम्र के बाद शरीर का लचीलापन कम होता जाता है, बैलेन्स बनाना मुश्किल हो जाता है। इसके फायदे की बात करें तो स्केटिंग हमारे पूरे कार्डियोवैस्कुलर सिस्टम को उत्तेजित करता है, हृदय की मांसपेशियों को विकसित करता है, और रक्त प्रवाह में सुधार करता है। यदि नियमित रूप से किया जाता है, तो आपके हृदय गति में सुधार करता है। एक बार जब आप तकनीक में महारत हासिल

कर लेते हैं, तो आपके संतुलन, लचीलापन, नियंत्रण और सजगता की भावना विकसित हो जाती है।

रोलर स्केट करने के लिए आपको केवल अच्छी तरह से फिट होने वाले स्केट्स की एक पेयर की जरूरत होती है। आप एक स्पोर्टिंग स्टोर से अपने लिए स्केट्स की एक पेयर खरीद सकते हैं। रोलर स्केट्स के अलावा, आपको इन चीजों की भी जरूरत पड़ सकती है। एक हेलमेट, हर कोई शुरुआत में थोड़ा लड़खड़ाता और गिरता ही है, और एक हेलमेट पहनना, आपके सिर को किसी बड़ी चोट से बचाए रखेगा। स्केट्स सीखने के दौरान आपके हाथ और पैर कई बार जमीन से टकराएंगे और आपको खरोंच बगैरह लग सकती है, तो फिर नी पैड्स और रिस्ट गार्ड्स का इस्तेमाल करके, खुद को सुरक्षित रख सकते हैं। इसे सीखने में मेरी समझ से जो मूल बात है वो सही पोस्चर बनाना, ग्लाइड करना सीखना, रुकने की प्रैक्टिस करना, ब्रेक लगाना जो कई प्रकार से लगाए जाते हैं, टर्न करना आदि कुछ मुख्य पड़ाव हैं। जिसको सीखने के बाद आप स्केटिंग का आनन्द उठा सकते हैं। सलाह की बात करें तो अपने लेस को अच्छी तरह से बांधने का ख्याल रखें, नहीं तो वो खुल जाएंगे और स्केटिंग करते समय उनके ऊपर आकर आप अपना बैलेंस खो बैठेंगे। शुरुआत में धीमे आगे बढ़ें। आप अपनी स्पीड से तेज मत जाएँ। अगर आप तेज बढ़ेंगे, तो आप गिर सकते हैं, खुद को चोट पहुंचा सकते हैं। स्केट्स के सही फिट आने की पुष्टि कर लें। अगर आप गलत साइज पहनते हैं, तो आपको बैलेंस बनाने में मुश्किल होगी। हफ्ते में केवल कम से कम एक बार भी प्रैक्टिस करना आपको बेहतर बनाने में मदद करेगा। सावधान रहें और दूसरे लोगों को अच्छा करते देखकर, खुद पर भी वैसा ही करने का दबाव मत डालें। खुद को बताएं कि आप ये कर सकते हैं। नर्वस या परेशान रहना, आपके गिरने के चांस को बढ़ा देगा। कॉन्फिडेंस के साथ चलें।

अपने सपनों का पीछा करने की कोई उम्र सीमा नहीं है, अगर आप इसे पसंद करते हैं, तो बस इसे कर सकते हैं। भले ही आप इसमें विफल हो सकते हैं। कोशिश करने के बाद इसे रोकने का फैसला तो आप ले ही सकते हैं। इस तरह आपको भविष्य में इस बात का पछतावा नहीं होगा कि आपने इसे आजमाया नहीं। जैसे ही आप प्रोपर स्टांस या मुद्रा को और ग्लाइड करना एवं रुकना सीख लेते हैं, फिर आप बस कुछ ही समय में रिक (rink) के चारों ओर सेलिंग करना शुरू कर देंगे। मेरा मानना है उम्र तो बाधा होती ही है पर कुछ ख्वाहिशें अगर हो सकें तो पूरी करने की कोशिश करनी चाहिए और अगर मन से कोशिश की जाए तो उम्र भी साथ देती है, शरीर भी लचीला होता है और भरपूर आनंद भी आता है। अपने आप पर भरोसा भी बढ़ता है कि अभी भी हम कुछ नया, कुछ अपने मन का, कुछ अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं। अभी भी मैं स्केटिंग में निपुण तो नहीं बना हूँ पर इंजॉय बहुत कर रहा हूँ। मंजिल पर पहुंचने से ज्यादा सफर के उतार-चढ़ाव ही ज्यादा आनंद देते हैं। वैसे भी स्केटिंग एक्सपर्ट बनने की और स्केटिंग की कलाबाजी सीखने का कोई शौक नहीं है बस हवा को चीरते हुआ कुछ गुनगुनाते हुए, लहराते हुए ग्लाइड करते सपनों का आनंद उठाना है।

**अरे हजूर! एक ही जिंदगी है पूरा मजा उठाइये,
ख्वाहिशों को मत दबाइये, भरपूर कमाइये,
पर थोड़ा अपने पर भी दया दिखाइये,
उम्र तो सचमुच एक बाधा है,
पर हो सके तो थोड़ा इसे चिढ़ाईये,
क्या पता उम्र भी साथ निभाएं,
और आप अपने मन का कुछ और कर पाएँ।**



विषैले बीज



✍ राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भीड़ धीरे धीरे छंटने लगी
अनेक खेमों में बंटने लगी
नफरत की पौध पनपने लगी
मशान की आग जलने लगी

दूर तक फैला घना अंधकार
बेगुनाह हुए सनक के शिकार
मानवता झेलती अनवरत प्रहार
रोटियाँ सेंकते जंगली सियार

आशंकाओं के बीज बोए गए
यातनाओं के जड़ सींचे गए
दुखों के पत्ते उपजाए गए
घृणा के वृक्ष लहलहाए गए

भव्यता की चकाचौंध छलती
विकास की जयघोष फलती
विद्वता चारण—गान उगलती
दया करुणा हाथ मलती

घाव कुरेदकर मरहम लगाए
आग लगाकर जल बरसाए
टुकड़े करके एकत्व समझाए
लाशों के भी धर्म गिनाए



भाषणों से ढाए गए कहर
विचारों में मिलाए गए जहर
पर बहुत विषैली है ये लहर
प्रलय से पूर्व सोच, जरा ठहर

तुम्हारे हाथों में है शूल
हमने लिया हाथों में फूल
याद कराएँगे आपको भूल
बेबस बदलने पड़ेंगे उसूल

हाथ से मिलने लगे हाथ
तुम्हारे मित्र छोड़ देंगे साथ
इन्हें राह दिखाना, मेरे नाथ!
ताकि इंसानियत न हो अनाथ।



जब मैं भी बेरोजगार था



✍ पवन कुमार

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

यह कहानी पूरी तरह सत्य घटना पर आधारित है। इस कहानी में दर्शाये गए सारे पात्र वास्तविक हैं जो कि मैंने अपने मित्रों के साथ जीया है।

जब मैं वर्ष 2006 में एक कोचिंग संस्थान में प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहा था। उसी दौरान मेरी मुलाकात मेरे प्रिय मित्रों से हुई जिनके नाम सुबोध, संजित, बादल, सुभाष, पप्पू, दुर्गा एवं परमेश्वर हैं। हम सभी लोग पढ़ाई में औसत थे परंतु सभी मित्रों का कोई न कोई विषय मजबूत या कमजोर था। इसी कमजोरी को मजबूत करने के लिए सभी मित्रों ने मिलकर एक साथ रहने की योजना बनाई और एक किराए के कमरे में रहते हुए प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी पूरी मेहनत और लगन से करने लगे, जिसका परिणाम कुछ ही समय में दिखना प्रारम्भ हो गया। हम सभी के अंक सेट प्रैक्टिस में दिन प्रति दिन अच्छे होते जा रहे थे परंतु इस सबके अलावे हम सभी लोगों की एक समस्या भी थी जो प्रतिदिन नए रूप में खाना बनाते समय प्रकट हो जाती थी। चूंकि सभी का खाना एक साथ बनाया जाता था। जिसे बनाने के लिए रोज कैबिनेट की तरह बैठक बुलाई जाती थी। जिसमें थोड़ी नोक-झोंक के उपरांत किसे कौन सा महत्वपूर्ण विभाग सौंपा जाये (जैसे सब्जी लाना, काटना, बर्तन धोना और पोछा लगाना) तय किया जाता था और हाँ यदि किसी दिन मांसाहारी खाने की योजना बनी तो यह बैठक थोड़ी लंबी चलती थी। जिसमें चिकेन, प्याज एवं तेल मसालों के बजट से संबंधित गंभीर मुद्दों पर चर्चा किया जाता था। जिसमें सभी से बजट के अनुसार सहयोग राशि प्राप्त करने के उपरांत ही योजना का क्रियान्वयन किया जाता था। कई बार यह योजना बजट एवं उधारी के अभाव में विफल भी हो जाती थी परंतु जिस दिन यह बनाया जाता था उस दिन आचार संहिता भी लागू होती थी कि कोई भी इस दौरान पढ़ाई नहीं करेगा। एक दिन इसी तरह हम लोग बजट के सफल प्रावधान के उपरांत चिकेन खाने की

योजना बनाई। सभी लोगो ने पूरी तत्परता के साथ अपने-अपने कार्य को अंजाम दिया जिसके फलस्वरूप खाना तैयार हो गया। अब बारी थी इसके वितरण की जो कि एक महत्वपूर्ण एवं विवादित कार्य था जो कि आचार संहिता के अनुसार बववा (खाना बनाने वाला) के द्वारा किया जाता था। इस चिकेन वितरण दौरान वह व्यक्ति किसी दंडाधिकारी की तरह व्यवहार करता था जिसने भी उससे गुस्ताखी की या तात्कालिक पुरानी रंजिस है तो उसे लेग पीस (रान) नहीं मिलेगा, यह तो तय था। हाँ! बर्तन धोने वाले का एक अलग ही शर्त था कि दो लोग एक साथ खाएँगे जिससे उसे कम मेहनत करना पड़े। एक दिन इसी तरह से शर्त अनुसार प्रति दो व्यक्ति के लिए चिकेन चावल वितरण हो चुका था सभी लोग अपने-अपने सहयोगी के साथ थाली को सुरक्षा घेरे में ले चुके थे। आक्रमण होने ही वाला था कि एका-एक बिजली चली गई। कमरे में पूरी तरह से अंधेरा छा गया था परंतु कोई भी माचिस से मोमबत्ती जलाने का अदम्य साहस नहीं जुटा पा रहा था क्योंकि सभी को उनके चिकेन पीस के गायब होने का डर सता रहा था फिर उस दिन मैंने अपने साहस का नमूना पेश किया और अपने सहयोगी मित्र को हाथ में अपने दो चिकेन पीस देकर माचिस जलाया और मोमबत्ती से पहले अपने चिकेन की ओर देखा। इस काम को तय योजना के तहत सभी ने अपने सहयोगी के साथ अंजाम तक पहुंचाया।

आज सभी मित्र सफल हैं और सभी के पास चिकेन खाने के पर्याप्त पैसे हैं परंतु कमी है तो उन मित्रों की, जिनके साथ जिंदगी का सबसे स्वादिष्ट खाना खाया था। ♦

अति सर्वल वर्जित



हेमन्त कुमार

हम सभी जानते हैं कि हर व्यक्ति के पालन-पोषण में समाज और परिवार दोनों का बहुत महत्व होता है। अगर किसी बच्चे को बच्चे की तरह दिखाया और समझाया जाए तो वह उसी स्वभाव के साथ बड़ा होता है। आजकल लोग अपने बच्चे को सिर्फ अपना मानते हैं और दूसरों को अलग मानते हैं, जिसके परिणामस्वरूप लोग बच्चे की गलती को समझने के बजाय माता-पिता से शिकायत करते हैं। होना यह चाहिए कि समाज के सभी बुजुर्ग उसके लिए अभिभावक के समान हों।

वर्तमान पीढ़ी में माता-पिता तरह-तरह के कारणों से अपने बच्चों के प्रति लापरवाह होते जा रहे हैं, लेकिन वे इस बात से अनजान हैं कि वे अपने बच्चों के साथ जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके लिए वे ही जिम्मेदार हैं।

एनएसएसओ द्वारा सर्वेक्षण और अनुसंधान में पाया गया है कि भारतीय माता-पिता अपने बच्चों को फोन देते हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि उनके बच्चे क्या उपयोग करते हैं या क्या जांचते हैं। उनके बच्चे क्या उपभोग कर रहे हैं... आदि।

एक डॉक्टर माई फ्रेंड ने, जब उसने एक 2-2.5 साल के बच्चे को यूट्यूब शॉर्ट्स या इंस्टा रील्स के माध्यम से स्क्रॉल करते देखा, तो वह चौंक गई, वह समझ गई कि बच्चे अपने अनुभव और उम्र के अलावा और भी बहुत कुछ देखते हैं।

यहां तक कि कई माता-पिता अपने बच्चों को खाना खिलाने के दौरान उन्हें लुभाने के लिए फोन देते हैं, जो कई बार अच्छा होता है क्योंकि एकल परिवारों में माता-पिता के अलावा उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होता है। लेकिन इससे समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। यदि हर बार माता-पिता अपने बच्चों का

ध्यान भटकाने के लिए उन्हें फोन दें ताकि वे अपना काम पूरा कर सकें तो इससे बच्चों की आदत खराब हो जाती है। फोन न मिलने पर वे गुस्सा हो जाते हैं और जब मां-बाप उन्हें डांटते हैं तो वे अपने मां-बाप को अपना दुश्मन समझ बैठते हैं और इसका फायदा कोई और उठा सकता है।

शोध में पाया गया है कि आने वाली पीढ़ी में प्रकृति के विपरीत बच्चों की किशोरावस्था जल्दी आ रही है जहां लड़कियों में मासिक धर्म 14-15 के बजाय 10-11 साल में आ रहा है, वहीं लड़कियों के प्रति लड़कों का आकर्षण भी तेजी से बढ़ रहा है। किशोरों में यौन अपराध में भी बढ़ोत्तरी हो रही है।

माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों के साथ समय बिताएं और कोशिश करें कि जब तक बच्चा 6-7 साल का न हो जाए तब तक उसके सामने इलेक्ट्रॉनिक्स के उपकरण जैसे मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर आदि का इस्तेमाल न करें। एक अलग छोटा कमरा बनाएं जिसमें आप इन उपकरणों का उपयोग कर सकें।

स्मार्ट फोन का अधिक उपयोग बच्चों में फायदा की जगह नुकसान ही पहुँचा रहा है। बच्चों का बचपन सिकुड़ता जा रहा है। बच्चों की मासुमियत का लोप होता जा रहा है। सरकार और समाज को इस ओर जल्द ध्यान देने की आवश्यकता है।

— सुपुत्र श्री सतीश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कैसे करोगी तीज तुम

कैसे करोगी तीज, थकी सी दिखती हो तुम
उम्र पहले जैसी नहीं, दवा पर चलती हो तुम।
करोगी उपवास और दवा भी न लोगी तुम
मुझे ये मंजूर नहीं, छोड़ो अपनी जिद तुम!

कैसे बहकी-बहकी बातें करते हो प्रियतम तुम
आशीष न लूँ सुहाग की, ऐसा कहते हो तुम!
नारी हूँ हिंद की मैं, प्रिय रोक न लगाओ तुम
रहूँगी बिलकुल ठीक मैं, व्यर्थ डरते हो तुम!

तो प्रिय आधा दिन मैं सहूँ, आधा दिन तुम
आधा तीज मैं करूँ और आधा तीज तुम्।
तुम्हारे बिन मैं आधा और मेरे बिन हो तुम
चलो करे पूरा तीज मिलकर हम और तुम!

शब्दों में उलझाकर, मुझे भरमा रहे हो तुम
खेल शब्दों से, बात अपनी मनवा रहे हो तुम!
ये आधा-आधा का, क्या रट लगा रहे हो तुम
सावित्री को शब्दों से हराने की चाह रहे हो तुम!

मैं हूँ तुम्हारी अर्धांगनी, पर पूरा-पूरा हो तुम
या दिखा दो लिखा 'अर्धांगना' कहीं पर तुम्।
चलो लगाओं अब मेंहदी मेरे हाथों में तुम
व्यर्थ सर्च कर रहे हो, 'अर्धांगना' गुगल में तुम!



श्याम दत्त मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



मौसम

मौसम है भाई मौसम है,
गर्मी का ये मौसम है।

गर्मी के दिन आते हैं,
हमको बहुत सताते हैं।

बच्चे खाते आइस्क्रीम,
और बड़े पीते शीतल पेय।

मौसम है भाई मौसम है,
गर्मी का ये मौसम है।

मौसम है भाई मौसम है,
सर्दी का ये मौसम है।

सर्दी का मौसम जब आए,
सर्द हवाएं संग ले आए।

सूरज चाचा बादलों में छिपकर,
सबको काफी, चाय की याद दिलाएँ।

मौसम है भाई मौसम है,
सर्दी का ये मौसम हैं।

मौसम है भाई मौसम है,
बारिश का ये मौसम है।

आसमान पर छाए बादल,
बारिश लेकर आए बादल।

जब-जब पानी आता है,
पत्ते, फूल खिलाता है।

सबको पकौड़े की याद दिलाता है,
मौसम है भाई, मौसम है
बारिश का ये मौसम है।



✍ सान्ची सिंह
कक्षा- VI



पुत्री-देवेन्द्र कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

यात्रा देवभूमि की (मंदाकिनी)



✍ कृष्ण मुरारी जयपुरियार

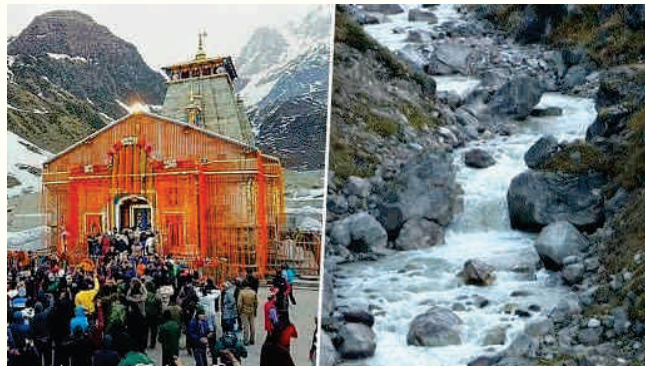
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दोपहर बाद लगभग 4 बजे मैं, पत्नी और मेरे एक मित्र की पत्नी, सहित उपासना एक्सप्रेस ट्रेन से हरिद्वार की पवित्र भूमि पर उतर चुके थे। तभी हमारे ड्राइवर ने फोन कर हमें बताया कि उसे स्टेशन पहुँचने में आधे घंटे और लगेंगे। फिर क्या था दोनों महिलाओं ने अपने मोबाइल कैमरे से स्टेशन पर बने भगवान शंकर की प्रतिमाओं को अपने साथ कैद करना शुरू कर दिया।

थोड़ी ही देर में ड्राइवर पहले से आरक्षित कार को लेकर हाजिर हो गया था। देवभूमि उत्तराखण्ड की चार धाम यात्रा के लिए पहले से ऑनलाइन निबंधन, जिसमें गाड़ी संख्या और ड्राइवर का विवरण हो, कराना अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा आपकी यात्रा में विघ्न उत्पन्न हो सकता है। जैसे ही हम स्टेशन ऋषिकेश के लिए आगे बढ़े हमें हरिद्वार-ऋषिकेश मांग पर बहुत जाम का सामना करना पड़ा और हमें नेपाली फार्म के रस्ते ऋषिकेश जाने से रोक दिया गया और प्रशासन ने हमें देहरादून एयरपोर्ट के रास्ते जाने के लिए निर्देशित किया। वहीं रास्ते में हमने वहाँ के 'रामू के मशहूर पकौड़े' की दूकान में पकौड़े का खूब आनन्द उठाया और अपनी भूख मिटाई। ऋषिकेश में आई.टी.बी.पी. के बड़े अधिकारी के सौजन्य से उनके अतिथि गृह में हमारे लिए कमरे आरक्षित थे जहाँ पहुँचकर हमने अपनी लगभग 24 घंटे की यात्रा की थकान मिटाई।

अगले दिन ऋषिकेश में गंगा जी में स्नान कर और माँ गंगा को प्रणाम कर हम अपने केदारनाथ की यात्रा पर निकल गये। वास्तव में देवभूमि उत्तराखण्ड सही अर्थों में पंच महाभूतों का स्थान है और इसलिए यहां पर पंच केदार, पंच बदरी, पंच प्रयाग, पंच धारा और पंच शिला प्रमुख है।

ऐसे तो ये पंच प्रयाग अर्थात् देव प्रयाग, रूद्र प्रयाग, कर्ण प्रयाग, नंद प्रयाग और विष्णु प्रयाग बद्रीनाथ के रस्ते में है पर प्रथम दो का आप केदार के



रास्ते में भी दर्शन कर सकते हैं। अब हमारा पहला पड़ाव था देव प्रयाग जो भारत की दो महत्वपूर्ण पवित्र नदियों— भागीरथी और अलकनंदा का संगम है और यहीं से ये दोनों मिलकर हमारी राष्ट्रीय नदी गंगा बन कर आगे बढ़ती है। इस संगम पर हरे और भूरे रंगों के नदियों का जल के मिलन का स्पष्ट दर्शन होता है जो एक अविस्मरणीय दृश्य है।

केदारनाथ की यात्रा के लिए हमें अलकनंदा नदी के साथ-साथ आगे बढ़ना था अतः हम उसी दिशा में बढ़ चले और रूद्रप्रयाग जहाँ अलकनंदा एक और पवित्र नदी जो केदारनाथ के ऊपर ग्लेशियर से निकलती है, मंदाकिनी से मिलती है। हालांकि हमारे रात्रि प्रवास के आई.टी.बी.पी. के शिव कुमार जी ने पहले से गोचर के अतिथि गृह का आरक्षण करा रखा था पर वह बद्रीनाथ के रास्ते में रूद्रप्रयाग से लगभग 27 कि०मी० आगे था और वहाँ से केदारनाथ लगभग 100 कि०मी० था इसलिए सुबह में वहाँ से आकर केदारनाथ पहुँचना थोड़ा दुरुह था क्योंकि उस रास्ते में भीषण जाम का सामना करना पड़ता है। पहाड़ों पर, खासकर उत्तराखंड के जाम, भूस्खलन और

खराब मौसम के कारण आपको कभी भी और कहीं भी अपनी यात्रा रोकनी पड़ सकती है परन्तु सबसे जरूरी है कि आप अपनी हिम्मत बना कर रखें अन्यथा इस यात्रा में जहां हिम्मत टूटा वहीं यात्रा रुका। अतः हमने केदारनाथ के रास्ते गुप्तकाशी में रुकने की योजना बनाई पर चूंकि वहां हमने पहले से किसी होटल में कमरे अरक्षित नहीं कराये थे अतः यह हमारे लिए एक समस्या थी। तभी हमने देहरादून के कार्यालय में पटना के कार्यालय—कर्मि श्री पंकज जी की सहायता ली और उन्होंने तुरन्त गुप्तकाशी के 'गढवाल मंडल विकास निगम' के होटल में चार बेड वाले एक कमरे का इंतजाम करा दिया। जिससे उस रात की हमारी समस्या का निराकरण हो गया। परन्तु बहुत प्रयास के बाद भी हमें हेलीकॉप्टर का टिकट उपलब्ध नहीं हो सका था। अतः हमने गौरी कुंड से केदारनाथ की लगभग 16 कि०मी० की खड़ी चढ़ाई घोड़े पर सवार होकर पूरा करने का निर्णय लिया।

'गढवाल मंडल विकास निगम' के प्रांगण से हिमालय की बर्फ से आच्छादित चोटियों को निहारना आपकी यात्रा की थकान को हर लेती है। ऐसे भी मुझे हिमालय की खूबसूरती सदा अपनी ओर आकर्षित करती रही है। इसिलिए तो अबतक मैंने हिमालय को कई बार नजदीक से देखा चाहे वह कश्मीर का क्षेत्र हो या हिमाचल के शिमला, मनाली, रोहतांग दर्रा, डलहौजी और धर्मशाला हो या फिर काठमांडू के पास से विशाल हिमखंड की शिलाओं के दर्शन। वैसे भी यात्राएं धन के उपभोग का सर्वोत्तम साधन है और अगर यह यात्रा धार्मिक स्थानों के दर्शन से संबद्ध हो तो यह और भी श्रेयस्कर होता है।

अगली सुबह के लिए हमें रात में दो बजे ही उठना था ताकि हम सोनप्रयाग तक पहुँच सकें, जहां से गौरीकुंड के लिए सटल अर्थात् सरकारी गाड़ी पकड़ सकें, जो वहां तक पहुँचने के लिए एकमात्र साधन है परन्तु गुप्तकाशी से मात्र 30 कि०मी० की दूरी भी सुबह 10 बजे तय नहीं कर सके क्योंकि वहां कई कि०मी० तक का भीषण जाम था। अतः हम हारकर लगभग 2 कि०मी० पहले ही गाड़ी छोड़कर पैदल ही चल दिये। वैसे तो रुद्र प्रयाग से ही हम

मंदाकिनी के साथ—साथ चल रहे थे परन्तु सोनप्रयाग से गौरीकुंड के रास्ते मंदाकिनी की कलकल धारा, जो सैंकड़ों फीट नीचे लगातार बहती आ रही थी, का शोर हमारे कानों तक स्पष्ट सुनाई दे रहा था और जैसे—जैसे हम ऊपर जा रहे थे यह शोर बढ़ता जा रहा था। वहां भी जाम के कारण सटल को हमें लगभग 1 कि०मी० पहले छोड़ना पड़ा और शेष चढ़ाई पैदल पूरी करनी पड़ी जो थकान से भरपूर थी। रास्ते में एक आईसक्रीम वाले से जब हमने आईसक्रीम खरीदी तो उसने उसके रैपर को वापस यह कहते हुए रख लिया कि आप तो इसे मंदाकिनी नदी में फेंक देंगे और माँ मंदाकिनी को गंदा कर देंगे। उसकी यह बात हमें दिल में घर कर गयी। इन पवित्र नदियों के प्रति हमारी आस्था और प्रबल हो गयी।

गौरीकुंड के बारे में कहानी है कि जब पांडव स्वर्ग की यात्रा पर निकले थे तो अपने स्वजनों की हत्या के पाप से मुक्ति के लिए भगवान शंकर से प्रार्थना करने के लिए उनके दर्शन के लिए हिमालय क्षेत्र में विचरण कर रहे थे कि तभी यहीं पर माता पार्वती से उनकी भेंट हुई, परन्तु माता ने उन्हें यह नहीं बताया कि भोलेनाथ कहां हैं पर यह बताया कि इसी रास्ते में आगे पर्वत पर उन्हें भोलेनाथ के दर्शन होंगे और इस स्थान का नाम गौरीकुंड पड़ा। जहां से लोग मंदाकिनी के शीतल जल में स्नान कर आगे केदारनाथ की यात्रा को बढ़ते हैं।

हम भी घोड़े से लगभग 6 घंटे के दुरूह चढ़ाई के बाद बाबा केदारनाथ के मंदिर प्रांगण में पहुंच चुके थे। केदार नाथ भारत के द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से एक है जो हिमालय के गोद में अवस्थित है। इसके चारों ओर बर्फ से आच्छादित हिमालय की चोटियाँ हैं, जो दूर से काले उजले बाघ के छाल यानी भोलेनाथ के आसन की तरह दिखते हैं। यहां का पूरा रास्ता दुर्गम पहाड़ी पगडंडी और घाटियों से भरपूर है। वहीं इसकी प्राकृतिक छटाएँ इतनी खूबसूरत है कि आपका थकान मिटा देती है। अर्थात् यह यात्रा भगवान शंकर के रौद्र और सौम्य रूप का एक साथ दर्शन कराता है। यहां का मौसम बड़ा अप्रत्याशित होता है क्योंकि कभी भी बारिश या बर्फवारी से आपको जूझना पड़ सकता है। अतः बरसाती की

व्यवस्था पहले से कर लेना बुद्धिमानी है। एक स्थान पर तो दोनों ओर बर्फ की दिवार के बीचों-बीच आपको पार करना होता है जो आपको मई-जून में भी कंपकपाने का मौका देता है।

चूंकि हमारे पहुंचने तक सूर्यास्त होने ही वाला था और रात्रि में लौटना श्रेयस्कर नहीं था अतः हमने बाबा के दरबार में ही रुकने का निर्णय लिया। इसमें पुनः आई.टी.बी.पी. के जवानों ने हमारी मदद की और पास में एक टेंट में इसकी व्यवस्था करा दी। चूंकि रात्रि में वहां तापमान माइनस में चला जाता है अतः हमारी कोशिश भी यही थी कि प्रवास जितना अधिक हो सके मंदिर के समीप किया जाए।

वर्ष 2013 की भीषण आपदा ने इस क्षेत्र को पूरी तरह लील लिया था और केवल मंदिर ही इस आपदा में अक्षुण्ण रहा और इसका कारण था वो भीमशिला जो ईश्वर कृपा से ठीक मंदिर के पीछे एक निश्चित दूरी पर आकर टीक गया और इस शिला को टिकने में त्रिकोणीय आकार की एक और शिला ने मदद किया। मानो मंदिर को बचाने के लिए स्वयं ईश्वर ने इसे नियत स्थान पर रख दिया हो। शिला के प्रति भी लोग अपनी आस्था प्रकट करते हैं और इसे भी ईश्वर की तरह पूजते हैं।

अगले सुबह एकदम ब्रह्म वेला में हमने भगवान केदारनाथ के दर्शन किए जो यहां पर एक वृषभ के कूबड़े के आकार में अवस्थित हैं।

कहा जाता है कि जब पांडव इस स्थान पर आए तो भोलेनाथ वृषभ के रूप में विचरण कर रहे थे कि तभी भीम की दृष्टि उन पर पड़ी और उसने उन्हें पहचान लिया परन्तु वह वृषभ जमीन में धंसने लगा परन्तु उनके पूरे जमीन में प्रवेश करने के पूर्व उनके कूबड़े को भीम ने पकड़ लिया और भगवान शंकर ने उन्हें फिर अपने वास्तविक रूप में दर्शन दिया। इस कूबड़े रूपी ज्योर्तिलिंग के रूप में चिरकाल इस स्थान पर बने रहने का निर्णय लिया। यह भी कहा जाता है कि इस वृषभ का सिर नेपाल के पशुपतिनाथ में निकला था जहां आज एक प्रसिद्ध मंदिर है। अतः इसका दर्शन भी आवश्यक है। केदारनाथ इस देवभूमि के पंच केदारों-केदारनाथ, तुंगनाथ,

रुद्रनाथ, मध्यमहेश्वर एवं कल्पेश्वर, में से एक है। इसकी उंचाई समुद्रतल से लगभग 11755 फीट है जो भारत के द्वादश ज्योर्तिलिंगों में सबसे उंचा है।

यहीं पास में हाल में स्थापित शंकराचार्य की विशाल प्रतिमा है जो मंदिर प्रांगण से लगभग 200 मीटर की दूरी पर है परन्तु इतनी उंचाई पर दो मीटर भी चलना मेरे लिए दूभर था। अतः हमने सीधे नीचे वापस जाने का निर्णय लिया। हालांकि लौटने के लिए एक बार हेलीकॉप्टर का टिकट को पाने के एक असफल प्रयास के बाद हम घोड़ों से नीचे के लिए प्रस्थान किये और पुनः लगभग पाँच घंटे की कठिन यात्रा के बाद गौरीकुंड पहुँच गये। यहां से उतरना चढ़ने से भी ज्यादा खतरनाक है क्योंकि घोड़े के पांव कब फिसल जाए यह कह नहीं सकते। जिससे कई बार भीषण दुर्घटना हो जाती है इसलिए अच्छा है कि वृद्ध और बच्चे इस यात्रा से परहेज करें। यहां घोड़ों और पैदल यात्री दोनों के लिए एक ही मार्ग है जो कहीं-कहीं पर इतना संकरा है कि आप परेशानी में पड़ जाते हैं।

नीचे उतरते समय हम इतने थक चुके थे कि हममें और चलने के लिए कुछ भी उर्जा नहीं बची थी। अपनी गाड़ी तक जाना जो लगभग एक कि०मी० दूर खड़ी थी, भी एक कठिनतम कार्यों में से एक लग रहा था। खैर, हम अपनी गाड़ी तक पहुँचे और आगे की यात्रा के लिए निकल पड़े। तभी घनघोर बारिश से हमारा पाला पड़ा। हमने फिर आई.टी.बी.पी. के शिव कुमार जी से सम्पर्क साधा जो हमारे लिए भगवान शिव के मानस रूप में हमारी मदद कर रहे थे। उन्होंने हमारे लिए रुद्रप्रयाग से 27 कि०मी० दूर अलकनंदा तट पर बने गेस्ट हाउस में रात्रि प्रवास की व्यवस्था कर दिये।

मां मंदाकिनी को छोड़कर हम माता अलकनंदा की धारा के साथ आगे बढ़ चुके थे अपने अगले पड़ाव की ओर।

(शेष अगले अंक में)

बच्चों पर एंड्रॉयड के प्रभाव एक समालोचना



✍ रुपेश कुमार सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

इंसान परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना कहलाता है क्योंकि उसे सभी जीवधारियों में सर्वाधिक बुद्धिमान और चिन्तनशील बनाया गया है। इस बुद्धिमत्ता के सहारे वह प्रकृति प्रदत्त संसाधनों के सर्वोत्तम और सतत् उपयोग द्वारा स्वयं व अपनी सभ्यता के विकास हेतु नित नए आविष्कार करता रहा है। आधुनिक परिवेश में मानव जीवन को विभिन्न भौतिक सुख एवं सुविधाएं प्रदान करने में संचार के साधनों का भी स्थान अग्रगण्य पंक्ति में आता है और आज संचार का सर्वाधिक लोकप्रिय साधन है मोबाइल, जी हाँ! वही मोबाइल जो वाइस् कालिंग और टेक्स्ट मैसेजिंग की अद्भुत सुविधाएं प्रदान करने के कारण अपने पदार्पण के साथ ही दुनिया भर में छा गया। एंड्रॉयड इसी मोबाइल का अद्यतन और चमत्कारी अवतार है जिसने तकनीकी और संचार के क्षेत्र में एक क्रांति ला दी है।

महान इंग्लिश कवि 'विलियम वर्डस्वर्थ' की पंक्ति "Child is the father of the man" के आशय से हम सभी भली भांति परिचित हैं। अतः जब भी हम किसी मानव आविष्कार का मानव जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करें तो उसका हमारे बच्चों पर प्रभाव पर सबसे पहले विचार करना होगा क्योंकि हमारे बच्चे ही हमारे देश के भविष्य हैं। हमारी भावी पीढ़ियों के निर्माता हैं। आइये अपनी व्यस्त दिनचर्या से थोड़ा सा समय चुराकर उस विषय को देते हैं जो हमारे नौनिहालों के भविष्य से अत्यंत गहराई से जुड़ा है।

विज्ञान का कोई भी आविष्कार कभी भी नकारात्मक नहीं होता बल्कि हम मानव ही हैं जो इसे संयमित, विवेकशील प्रयोग द्वारा वरदान या असंयमित, विवेकरहित प्रयोग द्वारा अभिशाप सिद्ध करते हैं।

एंड्रॉयड भी इसका अपवाद नहीं है। आइये सर्वप्रथम हम बच्चों पर इसके सकारात्मक प्रभावों से परिचित हों।

प्रिय पाठकगण! हम बच्चों पर एंड्रॉयड के सकारात्मक प्रभावों को निम्नलिखित बिन्दुओं में लिपिबद्ध करने का प्रयास कर सकते हैं:—

(1) शिक्षा का स्रोत:— एंड्रॉयड डिवाइसेस शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों के लिए अद्वितीय संसाधन हैं। वे शिक्षा संबंधित ऐप्स, गेम्स, और इंटरनेट से ज्ञान और सूचना बड़ी ही सरलता से प्राप्त कर सकते हैं। गूगल सर्च इंजन और यूट्यूब आज के गरीब एकलव्यों के लिए द्रोणाचार्य का गुरु-ज्ञान साबित हो रहे हैं। जी हाँ! अगर आज एक छात्र ठान ले तो वह सिर्फ यूट्यूब से सामान्य पाठ्यक्रम से लेकर किसी भी व्यावसायिक या तकनीकी विषय में महारत हासिल कर सकता है। हाल ही में लॉच हुए chatgpt ने तो इस क्षेत्र में एक अभूतपूर्व क्रांति ही ला दी है।

(2) मनोरंजन:— एंड्रॉयड डिवाइसेस बच्चों को मनोरंजन और मनोरंजक सामग्री का एक पूरा संसार उनकी उँगलियों के एक क्लिक पर उपलब्ध कराते हैं। वे अपने पसंदीदा गेम्स, वीडियो, फिल्में, एनीमेशन, म्यूजिक आदि का आनंद ले सकते हैं। मनोरंजन, बच्चों के तनाव को सहजता से दूर करता है इसका सहजता से हर जगह सर्वसुलभ होना अत्यंत आवश्यक है और इस कसौटी पर एंड्रॉयड डिवाइसेस से ज्यादा खरा कौन उतर सकता है।



आपने इसे हाथ में उठाया नहीं कि हास्य, रोमांच और अन्य हर तरह के मनोरंजन की जादुई दुनिया का जिन्न आपके सामने उपस्थित हो जायेगा और बोलेगा "हुकुम मेरे आका"।

(3) सामाजिक संचार— एंड्रॉयड डिवाइसेस बच्चों को अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के साथ संचार करने की सुविधा प्रदान करते हैं। वे वीडियो कॉल, चैट ऐप्स, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने प्रियजनों के साथ कहीं भी और कभी भी जुड़ सकते हैं। यह उनकी सामाजिक सजगता और आपसी संवाद कौशल को विकसित कर सकता है।

(4) रिसर्च और गहन अध्ययन— एंड्रॉयड डिवाइसेस बच्चों को विश्व में घटित घटनाओं, वैज्ञानिक खोज, इतिहास, विज्ञान, प्राकृतिक संसाधनों, कला आदि के बारे में विस्तृत ज्ञान प्राप्त

करने की सुविधा प्रदान करते हैं। यह उनकी शिक्षा और सामान्य ज्ञान को मजबूत करता है।

(5) क्रिएटिविटी का समर्थन— एंड्रॉयड डिवाइसेस बच्चों की क्रिएटिविटी का समर्थन कर सकते हैं। उन्हें छवि संपादन, ड्राइंग एप्लिकेशन, संगीत सम्पादन, वीडियो बनाने के ऐप्स, कहानी लिखने के उपकरण आदि का उपयोग करके खुद को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अवसर मिलता है। इससे उनकी सृजनात्मकता, समस्या हल करने की क्षमता और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

(6) व्यापारिक कौशल— एंड्रॉयड डिवाइसेस बच्चों के व्यापारिक कौशल को विकसित करने में मदद कर सकते हैं। वे वित्तीय सूचना, बाजार अपडेट, उद्योग के बारे में जानकारी, और बाजारी अनुसंधान के लिए आवश्यक एप्लिकेशन्स का

उपयोग कर सकते हैं। यह उन्हें व्यापारिक मानसिकता, विपणन कौशल और नए आधारों पर उद्यमिता को समझने में मदद कर सकता है।

प्रिय पाठकगण! इस तरह हम देखते हैं कि सही संरचना, उचित नियंत्रण और प्राथमिकता के साथ, एंज्रॉयड डिवाइसेस बच्चों के लिए शिक्षात्मक, मनोरंजक और विकासकारी साथी बन सकते हैं। परन्तु इनका अनियंत्रित और विवेकरहित प्रयोग हमारे बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का नाश करते हुए उनके सुखद भविष्य पर एक अंधकारमय एवं डरावना ग्रहण साबित हो सकता है। इस संसाधन के प्रयोग को लेकर हमारी सतर्कता जैसे ही घटती है, उपर्युक्त तमाम सकारात्मक प्रभाव शून्य में बदल जाते हैं और यह डिवाइस एक मायावी असुर बन जाता है जिसका रूप व व्यवहार तो अत्यंत लुभावना होता है परन्तु उसकी प्रकृति हमारे बच्चों के सम्पूर्ण विनाश करने की होती है। बच्चों पर पड़ रहे इसके नकारात्मक प्रभावों से आज दुनिया भर के अभिभावक चिंतित, दुखी एवं भयाक्रांत हैं। वैसे तो सकारात्मक प्रभावों की तुलना में इसके नकारात्मक प्रभावों की सूची अत्यंत लम्बी है परन्तु हम उन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं में लिपिबद्ध करने का प्रयास कर सकते हैं:—

(1) शारीरिक सक्रियता में कमी— पहला प्रभाव जिस पर हमें सर्वप्रथम ध्यान देना चाहिए, वह है बच्चों की शारीरिक सक्रियता। बच्चे जब एंज्रॉयड डिवाइस के लगातार उपयोग की लत के शिकार हो जाते हैं तो वे अपने साथियों और परिवार के साथ वास्तविक समय में संवाद करने, खेलने और शारीरिक गतिविधियों में हिस्सा नहीं ले पाते हैं। यूँ कहें कि एंज्रॉयड डिवाइस उनको उनके कमरे की परिधि में कैद कर देता है, वे आउटडोर खेल और गतिविधियों से बिलकुल दूर हो जाते हैं। इसका उनकी शारीरिक सक्रियता पर अत्यंत असामान्य प्रभाव पड़ता है, और यह स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं

जैसे मोटापा और शारीरिक निष्क्रियता के रूप में सामने आता है।

(2) क्षय होता मानसिक स्वास्थ्य— वर्तमान समय में एंज्रॉयड डिवाइसेस बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए धीमा जहर साबित हो रहे हैं। इंटरनेट पर कई बार उनकी आयु के अनुपयोगी व प्रतिबंधित सामग्री भी शामिल होती है। मुक्त और उपयोगकर्ता की आयुवर्ग को पहचानने में असमर्थ या तटस्थ इंटरनेट, बच्चों के बीच विभिन्न रूपों में उन्मुक्त तरीके से हिंसा और अश्लीलता परोस रहा है। जिससे बच्चे अपनी आयु के अनुसार व्यवहार से दूर हो रहे हैं। वे जिद्दी, अविवेकी और हिंसक हो रहे हैं। नींद की कमी, तनाव, और मनोवैज्ञानिक असंतुलन के शिकार हमारे बच्चे दयनीय अवस्था में पहुँचते जा रहे हैं।

(3) सामाजिक विकास की अवरुद्धता— एंज्रॉयड डिवाइसेस बच्चों को वास्तविक दुनिया से दूर कर एक आभासी दुनिया में ले जाते हैं जहाँ हर चीज बच्चों के मनमाफिक होती है। उन्हें स्वतंत्रता होती है कि वे उन्ही अवास्तविक चुनौतियों का सामना करें जो उन्हें पसंद हों और रोमांचित करते हों। इस आभासी दुनिया में वो जैसा भी व्यवहार करें उन्हें उनकी कमी का आभास कराने वाला कोई मित्र या अभिभावक नहीं होता। उलटे इस आभासी दुनिया में गेम या सोशल मीडिया से जुड़े अवास्तविक मित्र उनसे अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उनकी खामियों को भी खूबियों के रूप में पेश कर सकते हैं। इस तरह बच्चे परिपक्वता के अभाव में अपने माता-पिता, सम्बन्धियों सहित सम्पूर्ण वास्तविक मानव समाज से दूर होते जाते हैं और अपना पूरा समय इस आभासी दुनिया में ही गुजारना चाहते हैं। वो गेम या सोशल मीडिया पर जितने मुखर होते हैं वास्तविकता में अन्य लोगों के साथ संवाद करने और संबंध बनाने के अवसर से वे उतना ही कटते चले जाते हैं। वे अपने डिवाइस के साथ इतना व्यस्त हो

जाते हैं कि उन्हें सामाजिक स्थितियों में भाग लेने के लिए समय ही नहीं मिलता है। इससे उनका सामाजिक विकास बुरी तरह अवरुद्ध होता है और हमारे राष्ट्रनिर्माता अपने ही व्यक्तित्व निर्माण से चूक जाते हैं।

(4) शिक्षात्मक प्रगति पर दुष्प्रभाव— यह बिंदु आपको विरोधाभासी प्रतीत हो सकता है क्योंकि हमने इससे पहले इस क्षेत्र में इन डिवाइसों को बच्चों के एक अच्छे सहायक के रूप में पढ़ा है। परन्तु यह बिंदु बच्चों की इन डिवाइसेस पर अत्यधिक निर्भरता से जुड़ा है। आजकल बच्चों की स्मरणशक्ति तेजी से कमजोर हो रही है। इसके विभिन्न कारणों में से एक कारण एंड्रॉयड डिवाइसेस पर उनकी अत्यधिक निर्भरता भी है। उनके किसी भी प्रश्न का जवाब गूगल सेकंड्स में दे देता है। अतः उनको अपनी पाठ्यसामग्री याद करना व्यर्थ लगता है। वे अपनी किताबों से दूर जा रहे हैं। अपने शिक्षक से प्रश्न पूछने से ज्यादा सुविधाजनक उन्हें अपने प्रश्न का उत्तर गूगल या यूट्यूब पर खोजना लगता है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि पढ़ाई के डिजिटल साधनों से हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ और हमारा मस्तिष्क उतनी सहजता से नहीं जुड़ता जितना मुद्रित सामग्रियों से या वास्तविक समय में शिक्षक से किये गए संवाद से।

(5) नेत्र—ज्योति का हास तथा अन्य बीमारियाँ— जब हमारे बच्चे एंड्रॉयड डिवाइसेस पर गेम खेल रहे होते हैं तो उसमें प्रति क्षण बदलते दृश्यों और चुनौतियों के कारण उन्हें पलकें झपकने का अवसर ही नहीं मिलता। विशेषज्ञों के मुताबिक एक सामान्य, आराम की स्थिति में, प्रति मिनट पलक झपकने की औसत संख्या लगभग 20 होती है। परन्तु गेमिंग करते समय, यह संख्या आधे से भी कम हो सकती है। तीव्र गेमप्ले की अतिसतर्कता के दौरान, आप प्रति मिनट केवल 5—10 बार पलक झपका सकते हैं, जिससे आपकी आँखों के अत्यधिक शुष्क होने का

खतरा रहता है। इसके अलवा इन डिवाइसेस से निकलने वाला ब्लू प्रकाश सीधे रेटिना की कोशिकाओं को नुकसान पहुँचाता है, और तो और यह नेत्र कैंसर का कारण भी बन सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार इन डिवाइसेस से उत्सर्जित विकिरण ब्रेन ट्यूमर को भी जन्म दे सकता है। हमारे चारों ओर मोटे भारी चश्मों से लदे मासूम चेहरे बचपन के ऊपर इन डिवाइसेस के अत्याचार की पूरी कहानी बयाँ करते हैं।

प्रिय पाठकगण! उपर्युक्त बिंदु हमें हमारे बच्चों पर पड़ रहे, एंड्रॉयड डिवाइसेस के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभावों की विवेचना करते हैं। ये प्रभाव चाहे सकारात्मक हों या नकारात्मक, यदि ये कहा जाये की इन डिवाइसेस ने वर्तमान समय में हमारे बच्चों के माता—पिता, मित्रों एवं सम्बन्धियों का स्थान लेना शुरू कर दिया है तो शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस स्थिति पर अतिशीघ्र नियंत्रण आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। यदि हमारे बच्चे माता की ममता और पिता के संरक्षण की छाया से दूर एक आभासी दुनिया की तपती रेत पर बनी मृगमरीचिका की ओर भागते जा रहे हैं तो इसके दोषी हम स्वयं हैं। हमने अपनी जड़ें खुद खोखली कर ली हैं। यदि हमारे बच्चों का भविष्य अकेलेपन के अंधेरों में गुमनामियों की ओर अग्रसर है तो इसका एक ही कारण है— हमारी भौतिकतावादी सोच से टूटती—बिखरती परिवार—संस्था। अधिकाधिक भौतिक सुखों की तलाश में हम अपने परिवार से दूर हो रहे हैं। हमारे बच्चे चाचा, बुआ के साथ की मस्ती और दादा—दादी की कहानियों, उनके दुलार से दूर 2 से 3 कमरों के छोटे से फ्लैट में जीवन गुजार रहे हैं। आज एक होड़ सी चल गयी है पति—पत्नी दोनों के नौकरीपेशा होने की। बच्चे 2 साल के हुए नहीं की उन्हें किसी स्कूल के हवाले कर दिया जाता है। तर्क दिया जाता है उनकी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का परन्तु हर नौकरीपेशा माता—पिता का हृदय इसका वास्तविक कारण

जानता है, और वह है नौकरी के कारण बच्चों के लिए समय न निकाल पाने की मजबूरी! ऐसा नहीं कि यह समयाभाव सिर्फ नौकरी-पेशा माता-पिता के साथ ही है बल्कि व्यक्तिगत परिवार में एक सामान्य गृहणी के पास भी समय नहीं होता बच्चों के लिए। अन्य पारिवारिक सदस्यों के अभाव में अपना काम बिना किसी बाधा के करने का सबसे सरल उपाय जो उन्हें सूझता है वह है अपने नन्हें बच्चों के हाथों में एंड्रॉयड थमा देना। मासूम टकटकी लगाकर मोबाइल देखता रहता है और माँओं को लगता है कि यह डिवाइस कोई देवदूत है जो उनकी मदद करने के लिए ही बनाया गया है। किचेन से लेकर सीरियल और सोशल मीडिया इस देवदूत के सहारे आसानी से संभल जाते हैं और हमारे नौनिहाल कब यूट्यूब के रंगबिरंगे कार्टूनों की दुनिया से निकल कर पब्जी और फ्री फायर जैसे अनगिनत गेम्स, हिंसा और अश्लीलता से भरे गैर जिम्मेदार इन्टरनेट और सोशल मीडिया के अंधे तिलिस्म में फंस जाते हैं माता-पिता को पता ही नहीं चलता। हाल के दिनों में व्हाट्सएप्प सन्देश में प्राप्त एक तस्वीर ने मुझे झकझोर दिया। महिला के एक हाथ में एंड्रॉयड, उसपर जमी उसकी मंत्रमुग्ध नजरें, पीछे की ओर बढ़ाये दुसरे हाथ में दूध की बोतल और बेड से नीचे गिरा हुआ मासूम! सच वह तस्वीर बहुत कुछ कहती थी। आपने भी इसे जरूर देखा होगा और उस तस्वीर ने आपसे भी बहुत कुछ कहा होगा। कहा था न?

आज हमारी सरकार का नियंत्रण हर चीज पर है पर शायद इन्टरनेट जिसके साथ हमारे मासूम अपने माता-पिता से भी अधिक समय बिता रहे हैं उस पर किसी प्रकार के नियंत्रण की आवश्यकता किसी को भी महसूस नहीं होती। जहाँ पूरा विश्व रुग्ण होते बचपन पर हैरान, परेशान है वहीं इन्टरनेट को और मुक्त करने की जोर-शोर से वकालत भी चल रही है। जैसा मैंने पहले भी कहा है विज्ञान या इसका कोई आविष्कार कभी अभिशाप नहीं होता।

इसका प्रभाव होगा या दुष्प्रभाव, यह इसके उपयोग को लेकर हमारे विवेक पर निर्भर करता है। एंड्रॉयड पर हमारे बच्चों के लिए ज्ञान का महासागर भी मौजूद है और उनकी मासूमियत और स्वास्थ्य को निगलने वाले गैर- जिम्मेदार अश्लील, हिंसक वेब सीरिज और मस्तिष्क को थकाने वाले अंतहीन और निरर्थक आभासी गेम्स भी। यह भौतिकतावादी युग है। एंड्रॉयड डिवाइसेस पर हमारे बच्चों के लिए मनमोहक रंगों से अलंकृत धीमा जहर परोसने से सम्बंधित कम्पनियों और उत्पादकों को करोड़ों का मुनाफा होता है। हमारे बच्चे क्या लगते हैं इनके? ये क्यों सोचेंगे इनके लिए? आने वाले समय में भले ही हमारे बच्चों के हाथ में रोटी न हो पर एक एंड्रॉयड डिवाइस जरूर होगा। ऐसे में किसी मददगार या चमत्कार की आशा करना व्यर्थ है। हम माता-पिता हमेशा से अपने बच्चों के सुपर हीरो रहे हैं और आज समय आ गया है अपने बच्चों के लिए थोड़ा सा समय चुराने का, उनके अकेलेपन को अपने प्यार-दुलार से भरने का ताकि उन्हें किसी आभासी दुनिया की जरूरत ही न महसूस हो। वे एंड्रॉयड डिवाइसेस को अपने कल्याण के लिए प्रयोग करें न की यह डिवाइस ही उन्हें अपना गुलाम बना ले। इसके लिए हमें बच्चों को प्रारंभ से ही उचित मार्गदर्शन प्रदान करने की आवश्यकता है। उन्हें बताना होगा की यह डिवाइस अन्य संसाधनों की भांति उनके लक्ष्य प्राप्ति का साधन मात्र है, साध्य नहीं! अपनी दौड़ को थोड़ा सा विराम दीजिये, आपके बच्चों का सुखद भविष्य केवल आपके कमाए पैसे नहीं बना सकते, यह भविष्य बनाता है आपके बच्चों का उच्च व्यक्तित्व! और यह व्यक्तित्व केवल आप दे सकते हैं उन्हें। केवल आप जागिये! विज्ञान के इस अनूठे आविष्कार को अपने विवेक द्वारा अभिशाप का कलंक लगाने से रोक लीजिये और समेट लीजिये अपनी बाहों में— अपने मासूम फरिश्ते का बचपन।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत



✍ श्रीमती दिव्या नाथ

उत्तम जन जो कह गये,
बिल्कुल सत्य और सटीक ।
मन के हारे हार है बंधु
मन के जीते जीत ॥

राम सेतु निर्माण का,
कार्य जटिल जब आया था ।
स्वयं को अल्प समझ कहाँ तब,
वानर दल घबराया था ॥

युद्ध भूमि की जीत से पूर्व
वह मन के रण को जीत चुके थे ।
विवश हुई थी रावण सेना,
और कपि रघुवर मित्र श्रेष्ठ हुए थे ॥

जनकनंदिनी रामप्रिया ने
तब पायी खोई प्रीत,
और दिया संदेश जगत को
पावन और पुनीत ।
मन के हारे हार है बंधु
मन के जीते जीत ॥



सरिता जब अपनी आन में आई,
अपनी पूरी धार में आई ।
अवरोधों को दूर हटा कर,
अपनी राह स्वयं बनाई ।

चाहे पर्वत राह में आया ,
विघ्नों ने था सर को उठाया ।
अपनी राह स्वयं बनाकर,
सरी ने नव साम्राज्य बनाया ॥

राह के उसके चुभते कंकड़,
लिखें विजय के गीत ।
तभी तो, मन के हारे हार है बंधु
मन के जीते जीत ॥

रोक सका कब कोई मनुज को,
जिसने दृढ़ संकल्प लिया ।
बिन पंख तभी तो उड़ा गगन में ,
सागर का सीना चीर दिया ॥

मन एक उपकरण है भाई,
नियंत्रक सभी क्रियाओं का ।
तन तो मात्र अनुकरण करे है,
मन की अनंत क्षमताओं का ॥

सुख—दुख और जय—पराजय
हैं जगत की रीत ।
पर मन के हारे हार है बंधु ,
मन के जीते जीत ॥

द्वारा- सुभाष वर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सेवानिवृत्ति

“उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाए”
—बशीर बद्र

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार परिवार के निम्नलिखित कार्मिक अपने कार्यालयीन दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं। प्रहरी परिवार उनके स्वस्थ एवं आनंदमयी जीवन की कामना करता है।

क्र.स.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1..	देवराज गुप्ता	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2023
2.	नंदेश्वर कुमार सहनी	पर्यवेक्षक	30.04.2023
3.	संतोष कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	01.08.2023 (स्वैच्छिक)
4.	दिलीप कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.08.2023
5.	नवीन कुमार नीरज	पर्यवेक्षक	31.08.2023

श्रद्धांजलि

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना में कार्यरत श्री सुरेश राउत, सहायक पर्यवेक्षक का असामयिक निधन हो गया। प्रहरी परिवार उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता है। ईश्वर से कामना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दें एवं परिजनों को दुःख सहन करने का संबल प्रदान करें।



स्व. सुरेश राउत
सहायक पर्यवेक्षक
मृत्यु की तिथि— 09.08.2023

अंधाधुंध शहरीकरण तथा अतिशय महत्वाकांक्षा के मकड़जाल में छिनता बचपन



शंकरा नंद झा
हिंदी अधिकारी

बचपन एक ऐसा शब्द जिसकी याद आते ही कोई भी व्यक्ति चाहे वह अमीर हो या गरीब, महिला हो या पुरुष, कोई सेलीब्रेटी हो या आम आदमी हर कोई एक सुखद अहसास में खो जाता है। बचपन जिंदगी का एक ऐसा सुनहरा दौर होता है जिसमें न कोई तनाव होता है न कोई फिक्र, न भविष्य की चिंता न अतीत का विषाद। यह एक ऐसी स्वर्णिम दुनिया की याद दिलाता है जिसमें स्वच्छंदता थी, जिसमें अलहड़पन था, जिसमें प्यार था, जिसमें अपनापन था। जैसे ही हम बचपन के दिनों को याद करते हैं तो हमें याद आते हैं वो खेत और खलिहान, खेल के मैदान, आम और अमरुद के बगीचे, अपने पड़ोसियों के घर जहाँ हम घंटों बिताया करते थे। एक ऐसा वक्त जब लगता था कि सारा गांव, सारे पेड़-पौधे, सारे खेत—खलिहान अपने ही हों।

दुर्भाग्यवश जब आज की पीढ़ी के बच्चों से एक-आध दशक बाद उनके बचपन के बारे में पुछा जाएगा तो उनके पास बताने के लिए न ही बचपन का कोई सुनहरा दौर होगा और न ही तनाव रहित स्वच्छंद बचपन के तराने होंगे। उनके पास बताने के लिए केवल 2-3 बेडरूम हॉल वाले घर के अंदर जेलनुमा बितायी गयी बचपन की धुंधली यादें होंगी, जिसमें सदैव कक्षा में प्रथम आने का दवाब तथा बिना किसी रुचि के भी डांस/ संगीत/ ड्राईंग/ पेंटिंग सीखने की मजबूरी थी।

आज की पीढ़ी अंधाधुंध शहरीकरण के एक ऐसे मकड़जाल में फंस गयी है जहाँ वह सब कुछ छोड़-छाड़ कर शहर में बस जाना चाहती है। आज प्रत्येक व्यक्ति का एक ही है सपना, शहर में हो एक आशियाना अपना। जिन लोगों के पास शहर में बसने

का न तो कोई कारण होता है और न ही समुचित साधन वह भी सब कुछ छोड़ कर शहर में बस जाना चाहते हैं। वह अपने गाँव की कई एकड़ जमीन बेचकर भी शहर में एक— दो बेडरूम हॉल वाला फ्लैट लेकर बस जाना चाहता है।

भू-माफिया तथा बिल्डर, लोगों की ऐसी महत्वाकांक्षा से भली भांति परिचित हो चुके हैं और वे ऐसे लोगों को अपने कुचक्र में फंसाने में पूरी तरह माहिर हो गए हैं। वे ऐसे लोगों को ऐसा सब्जबाग दिखाते हैं कि लोग एक छोटे से आशियाना के बदले अपनी सारी जमा-पूंजी बिल्डर को सौंपने को तैयार हो जाते हैं। यही बिल्डर लोग शहर के केंद्र से कई किलोमीटर दूर शहर से लगे किसी गाँव के चौड़ में एक नया कॉलोनी/सोसायटी/ अपार्टमेंट आदि बनाते हैं। एक ऐसी जगह पर जिसके कई किलोमीटर के दायरे में न तो कोई खेल का मैदान होता है, न ही कोई पार्क, बाग-बगीचे या खुली जगह। अमूमन 10 से 15 फीट की निजी सड़कों के इर्द-गिर्द बसायी गयी इन कॉलोनियों के कई किलोमीटर के दायरे में कुछ पेड़-पौधे लगाने की भी गुंजाइश नहीं होती।

माँ—बाप के शहरों में बसने की अकारण इच्छा से सर्वाधिक प्रभावित होते हैं उनके बच्चे। ऐसी कॉलोनी/ सोसायटी/ अपार्टमेंट में रहने वाले बच्चों के पास खेलने के लिए कोई भी मैदान या खुली जगह उपलब्ध नहीं होते। (कुछ गिने-चुने

सोसाइटी को छोड़कर जहाँ 300 से 500 वर्गफीट के खुली जगह को पार्क का नाम दे दिया जाता है जिसे उसमें रहने वाले लोगों की संख्या के अनुपात में देखा जाए तो उस खुले जगह को नगण्य माना जा सकता है। अधिकांश बच्चों के पास तो साइकिल चलाने तक की जगह उपलब्ध नहीं हो पाता है और उन्हें अपने 15X12 के ड्राइंग रूम या पार्किंग में ही साइकिल चलाकर संतोष करना पड़ता है। उपर से माँ-बाप का पड़ोसियों के साथ भी ऐसे घनिष्ठ संबंध नहीं होते कि बच्चे अपने पास-पड़ोस में कुछ समय बिता सकें या पड़ोस के हम-उम्र बच्चों के साथ मेल-जोल बढ़ा सकें। नतीजतन उन्हें अपना पूरा बचपन 1000-1200 वर्गफीट के जेलनुमा फ्लैट में बंद हो कर बिता देना पड़ता है। उपर्युक्त परिस्थिति में बच्चों के पास एकमात्र विकल्प होता है मोबाइल या विडियोगेम जिसमें वे घंटों अपना समय व्यतीत कर देते हैं जिससे उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

आजकल के बच्चों के जीवन में एक और दैत्याकार समस्या का प्रवेश हो चुका है और वो है कुकुरमुत्ते की तरह हरेक गली-चौराहे में खुल रहे कोचिंग संस्थान। ये कोचिंग संस्थान माँ-बाप (खासकर माँ) को इस तरह से अपने इंद्रजाल में फंसा लेते हैं कि उन्हें लगता है कि कोचिंग के बिना तो उनके बच्चे का जीवन ही बेकार है। चौथी-पांचवीं कक्षा से आई.ई.टी. और मेडिकल की तैयारी शुरू हो जाती है और छठी-सातवीं से यू.पी. एस.सी. की। स्कूल से आने के बाद बस्ता रखकर खाना खाया नहीं कि कोचिंग का समय शुरू हो जाता है। अधिकतर बच्चों के शाम का समय, जो कि हमारे जमाने में अमूमन खेलने-कूदने का समय माना जाता था, वह अब प्राइवेट कोचिंग में बीतता है। कोचिंग संस्थान भी पढ़ाने से अधिक होमवर्क देने में विश्वास रखते हैं ताकि बच्चा घर में हर समय होमवर्क करने में व्यस्त रहे और उनके माँ-बाप बच्चे

को हर वक्त किताब में घुसे देखकर फूले न समाएँ और अपने को धन्य मान सकें।

आजकल कई ऐसे प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान खुल गए हैं, खास कर के कोटा जैसे स्थानों में जो कि माँ-बाप को सलाह देते हैं कि उन्हें अपने बच्चों को स्कूल भेजने की आवश्यकता ही नहीं है, वे क्लासरूम टाइप कोचिंग में 6ठी कक्षा से ही अपने बच्चों को डाल दें तभी जा कर उनके बच्चे नीट / जे.ई.ई. एडवांस क्वालिफाई कर पाएंगे। ऐसे माँ-बाप को दसवीं / बारहवीं के परीक्षा की चिंता भी नहीं करनी पड़ती क्योंकि इन कोचिंग संस्थानों का संपर्क ऐसे मान्यता प्राप्त स्कूलों के साथ रहता है जो कि बच्चों के बिना स्कूल गए ही उनके फॉर्म भरने की व्यवस्था कर देते हैं, वो भी न्यूनतम 75 प्रतिशत उपस्थिति के साथ।

इन कोचिंग संस्थानों का जादू तथा बच्चों को इंजीनियर / डॉक्टर / कलेक्टर बनाने का भूत माँ-बाप के सर पर इस कदर हावी रहता है कि उन्हें अपने बच्चे के उम्र का कोई ख्याल ही नहीं रहता। उन्हें पता ही नहीं चलता कि उनका बच्चा भी हाड़ मांस का बना एक मानव ही है जिसकी अपनी भी कई बाल-सुलभ इच्छाएं हैं। पक्षियों की भांति आसमान में स्वच्छंद उड़ने की लालसा और अपने हम-उम्र मित्रों के साथ खेलने-कूदने की अभिलाषा है।

जो माँ-बाप अपने बच्चों को इंजीनियर / डॉक्टर / कलेक्टर नहीं बनाना चाहते हैं, उनकी महत्वाकांक्षा तो और भी अधिक खतरनाक होती है। वे अपने बच्चों को छोटी-से-छोटी उम्र में ही सेलिब्रेटी बनाना चाहते हैं। उनकी तो बस एक ही इच्छा होती है कि उनका बच्चा डांस इंडिया डांस, सारे गा मा पा, लिटिल चैम्पस और इंडिया हैज गॉट टैलेंट जैसे रियलिटी शो का चैम्पियन बने। इसके लिए वे अपने बच्चों को सर्कस के जानवरों की भांति दिन-रात ट्रेनिंग देते हैं और उनके ऊपर ऐसा

दवाब बनाते हैं कि उसे न केवल टीवी पर आना होगा बल्कि उस शो को भी कैसे भी कर के जीतना ही होगा। इस चक्कर में बच्चों की अपनी कोई जिंदगी नहीं रह जाती और उन्हें अपने बचपन को न्योछावर कर के अपने माँ बाप के इशारे पर नाचना पड़ता है उन्हें ऐसी कई भाव भंगिमाओं तथा भावनाओं को सीखना पड़ता है जो आम तौर पर यौवन काल में नैसर्गिक रूप से विकसित होते हैं।

माँ-बाप की ऐसी महत्वाकांक्षाओं ने बच्चों के जीवन को एक प्रकार से नर्क बना दिया है। उनकी हालत सोने के पिंजरे में कैद चांदी की प्लेट में खाने वाली ऐसे पक्षी जैसी हो गई है जिसके पास पंख होते हुए भी कभी स्वच्छंद उड़ने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता।

ऐसे में जरूरी है कि सरकार और शासन-प्रशासन इस समस्या पर गंभीरता से ध्यान दे। केवल 'खेलो इंडिया' जैसे नारे देने से कुछ नहीं होगा। जब तक कि बच्चों के आस-पास खेल के मैदान नहीं होंगे, खुला आसमान नहीं होगा, बाग-बगीचे नहीं होंगे। अतः जरूरी है कि नए बसाए जा रहे कॉलोनियों हेतु एक विस्तृत मानदंड तैयार किए जाएं ताकि कोई भी कॉलोनी बसायी जाए तो उसमें चौड़ी सड़कें हों, निश्चित आकार का तथा जनसंख्या के अनुपात में खेल के मैदान हों तथा पेड़-पौधे एवं बाग-बगीचे हों।

कोचिंग संस्थानों पर भी लगाम लगाना आवश्यक है। नई शिक्षा नीति में इस बात का भी प्रावधान हो कि निश्चित उम्र से कम के बच्चों को किसी भी कोचिंग में दाखिला न दिया जाए। उनके लिए स्कूल की पढ़ाई ही काफी है। साथ ही इंजिनियरिंग/डॉक्टरी/यू.पी.एस.सी. आदि की तैयारी हेतु भी कोचिंग संस्थानों में एक निश्चित कक्षा के बाद ही प्रवेश दिलाई जाए।

माँ-बाप को भी यह ध्यान रखना है कि उनके बच्चे का नैसर्गिक विकास होने दिया जाए। हमारे जमाने में या उससे पहले जब 12वीं से पहले इंजिनियरिंग/मेडिकल की तैयारी शुरू नहीं की जाती थी तब भी बच्चे डॉक्टर/इंजीनियर बनते थे। उम्र के अनुसार ही बच्चों का मानसिक विकास होता है तथा उसी अनुसार वे चीजों को नैसर्गिक रूप से सीखते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि व्हाइट कॉलर जॉब ही जिंदगी का एकमात्र लक्ष्य नहीं होना चाहिए। समाज को भी अपना नजरिया बदलने की जरूरत है। प्रत्येक पेशा से जुड़े लोगों को समान एवं सम्मान के भाव से देखना चाहिए। इस समाज को जितना एक डॉक्टर/इंजीनियर की जरूरत है उतना ही अन्य साधारण काम वाले की भी जरूरत है। सबों के श्रम का उचित सम्मान होना चाहिए।



नन्ही बेटी के नाम उसके पापा का पत्र



✍ आशुतोष अभिमन्यु
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मेरी प्यारी बेटी,
जिस दिन से यह पता चला था कि तुम्हारी मां, मां बनने वाली है, तबसे ही दुनिया ने इसके कयास लगाने शुरू कर दिए कि बेटा होगा कि बेटी ! 100 में से 99 फीसदी दुनिया ने यही कहा कि बेटा ही होगा। ऐसा क्यों?

उन्होंने क्यों नहीं कहा कि बेटी होगी, इसके पीछे की वजह बताता हूं। रिश्तेदारों को लगता है कि अगर यह कह देंगे कि बेटी होगी तो होने वाले मां-बाप और उसके परिवार को यह बात बुरी लग सकती है। इस समाज में हर किसी को घर में बेटा चाहिए। इसलिए जिसको देखो वही कहता है, कि बेटा ही होगा।

अस्पताल में भी नर्स आती और यही कहती कि बेटा ही होगा। लेकिन जब तुम्हारा जन्म हुआ तो अचानक सबके सुर बदल गए। अब नर्स से लेकर रिश्तेदारों ने यह कहना शुरू किया कि अगला बच्चा बेटा ही होगा। अजीब समाज है बेटी।

तुम्हारे पैदा होने पर जो मुझे सुनने को मिला उसे मैं तुमको बताना चाहता हूँ ताकि तुम जानो कि बेटी के बारे में यह समाज क्या सोचता है? शायद यह समाज चाहता ही नहीं कि किसी को पहले बेटी पैदा हो। हां अगर एक-दो बेटा पैदा हो गया तो रिश्तेदार ही नहीं परिवार भी कहना शुरू करता है, अब एक बेटी हो जाए तो परिवार पूरी हो जाय।

जब तुम पैदा हुई तो कई लोगों से यह बात सुनने को मिली— अच्छा क्या होगा, बेटी भी अच्छी होती है। किसी ने कहा कि आजकल बेटी ही काम आती है, बेटा काम नहीं आता। एक ने कहा कि आजकल बेटी पढ़ने-लिखने से लेकर मां-बाप की सेवा करने तक, हर मामले में बेटों से आगे है।

किसी ने आसपास के कुछ परिवारों की कहानी बता दी। जहां चार पांच बेटों के रहते हुए भी मां-बाप की देखभाल कोई नहीं कर रहा था। लेकिन मुझे यह पता है कि सभी रिश्तेदार यह भूल गए थे उन्होंने पहले कहा था कि

बेटा होगा और अब बेटी पैदा हो गई तो मेरा दिल बहलाने के लिए इस तरह की बातें कर रहे हैं।

बेटी, तुम्हारे जन्म के अगले ही दिन से लोग दूसरा बच्चा लाने की सलाह देने लगे। इसके लिए भी जितनी मुँह, उतनी बातें होने लगी। किसी ने कहा कि अब बहन को एक भाई की जरूरत है, ताकि हमारी पारिवारिक दुनियाँ पूरी हो जाए। किसी ने कहा कि बेटी तो एक दिन छोड़कर चली जाएगी, साथ में रहने वाला भी तो चाहिए। बुढ़ापे का सहारा तो बेटा ही बनेगा।

अब मैं क्या बताऊँ बेटी, मैं तो बस ये चाहता हूँ कि दुनियाँ कभी मेरे नजरिए से तुमको देखें। मेरे लिए तुम इंसान हो और मेरा फर्ज है कि मैं तुमको इस समाज का एक बेहतर, आत्मनिर्भर इंसान बनाऊँ। तुम्हें हर वो अवसर मिले जो समाज बेटों को देता है। तुमको हर वो व्यवस्था मिले जो समाज बेटों को देता है।

और मैंने फिर फैसला किया है तुम्हें ही सब कुछ मानने का।

बेटी, तुमको मेरी पहली सीख यही होगी कि जीवन में आर्थिक और सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बनो। धरती पर मनुष्य जो समाज बनाकर जी रहा है, उसमें वही सिर उठाकर जी सकता है जो आत्मनिर्भर है। अपनी जिंदगी का फैसला वही ले सकता है जो आत्मनिर्भर है। फिर लोग तुम्हारे सामने बेटी को कमतर कहने की जुर्रत भी नहीं कर पाएंगे। इसका उदाहरण भारत के कठिनतम कहे जाने वाले संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) घोषित अंतिम परीक्षाफल में बेटियों के सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सर्वश्रेष्ठ पद पाना है। जो सर झुकाकर कहते थे बेटी हुई है, आज उनका गुणगान करते थक नहीं रहे हैं। ज्यादा क्या कहूँ समय के साथ बहुत कुछ तुम खुद महसूस करती जाओगी। तुम्हारे पापा ◆

मेट्रो



✍ विकास कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

गति ही जीवन है !
जीवन में द्रुत गति है ।
नया ये दौर है,
नहीं, जहाँ कोई ठौर है ।
भागते दौड़ते डगर हैं
परवाह नहीं यहाँ किसी और की ।
लगता जैसे
चलते-फिरते मुर्दों का शहर है ।
परिवेश हैं बदले से,
परिधान अधनंग नये से,
छुट गए संस्कार पीछे
निकल, आगे बढ़ने की होड़ है ।
ओझल हो जाते क्षण में
हर एक नये पड़ाव ।
वक्त से भी निकल जाने को आगे,
हर तरफ लगी अंधी अपनी दौड़ है ।
मचा चहुँओर अजीबोगरीब शोर है ।
बेबस खड़ा वो देखता
बोझिल होती जिंदगी, ओझल होते रास्ते ।
और, मंजिल कहीं और है ।
सुनता भला न कोई यहाँ,



ये नये फैशन का दौर है ।
चल ओ, मुसाफिर!
ये शहर वो नहीं, कोई और है ।
यहाँ न कोई ठौर है ।
यहाँ न कोई ठौर है ।

(सम्प्रति: वित्त एवं मुख्य लेखा अधिकारी
एम्स, नई दिल्ली)

कल्याण अनुभाग की गतिविधियाँ

दिनांक 31.01.2023 से 06.02.2023 तक गुजरात के गाँधीनगर में "अखिल भारतीय सिविल सर्विसेज बैडमिंटन टूर्नामेंट" 2022-23 का आयोजन किया गया था। राष्ट्रीय स्तर के इस प्रतियोगिता में आर.एस.बी. पटना टीम के तरफ से कार्यालय के श्रीमति वर्षा उपाध्याय, वरिष्ठ लेखा परीक्षक, श्रीमति प्रतिभा कुमारी, संपर्क, सुश्री चिमरन कलिता, डी०ई०ओ०, श्री अरिन्तप दासगुप्ता, डी०ई०ओ० ने भाग लिया था। श्रीमती उपाध्याय एवं श्रीमती प्रतिभा कुमारी ने क्रमशः मैनेजर तथा खिलाड़ी के रूप में भाग लिया तथा आरएसबी पटना की टीम को टूर्नामेंट में द्वितीय स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सुश्री चिमरन कलिता, डी०ई०ओ० ने आरएसबी पटना टीम में खिलाड़ी के तौर पर Women Doubles प्रतियोगिता में भाग लिया और टीम को द्वितीय स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री अरिन्तप दासगुप्ता, डी०ई०ओ० ने आरएसबी, पटना टीम में खिलाड़ी के तौर पर पुरुष डबल प्रतियोगिता में तृतीय स्थान दिलाने में सफल रहे।

कार्यालय परिसर में IDBI बैंक, द्वारा फरवरी 2023 माह तथा ICICI बैंक द्वारा अप्रैल 2023 माह में कैंप लगाया गया जिसके माध्यम से लोगों में वित्तीय जागरूकता का प्रसार हुआ।

कार्यालय के मल्टीपर्पस हॉल में अप्रैल 2023 माह में शारीरिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें एक विशेषज्ञ फिजियोथेरेपिस्ट के द्वारा लोगों को स्वास्थ्य संबंधी विषय पर जागरूक किया गया। कार्यालय के आवासीय परिसर में South Asia FM Ltd- के द्वारा Kitchen Premier League का आयोजन किया गया था। जिसमें रक्तचाप, मधुमेह इत्यादि की जाँच की गई। ♦

प्रशिक्षण और परीक्षा अनुभाग की गतिविधियाँ

1. आंतरगृह प्रशिक्षण में जनवरी 2023 से मई 2023 तक कुल 83 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया है। अनुमोदित आंतरगृह वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम कैलेंडर के अनुसार जून महीने में ई-ऑफिस, ओ.आई.ओ. एस. जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर आंतरगृह प्रशिक्षणों का आयोजन किया जा रहा है।
2. क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, रांची में प्रशिक्षण के लिए जनवरी 2023 से मई 2023 तक 21 विषयों में कुल 108 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया है।
3. सहायक पर्यवेक्षक के पद पर पदोन्नति के लिए

वरिष्ठ लेखापरीक्षकों का दो सप्ताह के अनिवार्य प्रशिक्षण का संचालन दिनांक 05-06-2023 से 20-06-2023 तक किया जा रहा है।

4. वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के पद पर पदोन्नति के लिए पात्र सहायक लेखापरीक्षा अधिकारियों का तीन सप्ताह का अनिवार्य प्रशिक्षण 11-05-2023 से 31-05-2023 तक आयोजित किया गया है। दिनांक 07.06.2023 को एक केंद्रीयकृत परीक्षा का आयोजन आर. टी. सी हॉल में आयोजित किया गया है।



कार्यालयीन गतिविधियाँ

स्वास्थ्य कैम्प



कार्यालयीन गतिविधियाँ

आपदा प्रबंधन



कार्यालयीन गतिविधियाँ

खेल एवं योग



कार्यालयीन गतिविधियाँ

स्वतंत्रता दिवस-2023



झूठ बोलता इंसान



✍ मनोज कुमार न.1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

झूठ बोलता इंसान, सच को दबाता इंसान,
अंतर में छिपी आत्मा को मारता इंसान ।
भरोसे का दिखावा, वास्तविकता में कुछ और
नई परिभाषाएँ गढ़ता इंसान ।

जिन्दगी के खेतों में, नफरत के बीज बोता इंसान
बिना सोचे—समझे द्वेष की फसलें उगाता इंसान ।
समाज के रंग—मंच पर अशांति का संगीत
जुमलों का तिलिस्म रचता इंसान ।

दंगों में मरता, कराहता इंसान,
अपनी चिता सजाता इंसान
मँडराते गिद्ध, लाशों का अंबार
अपने—अपने हिस्से का वोट बटोरता इंसान ।

रिश्तों की गर्माहट मिटाता इंसान
आपसी विश्वास को खोता इंसान ।
समृद्धि के मोह में वृक्ष काटता इंसान
गर्मी में छांह, वर्षा में जल खोजता इंसान ।

बिहार का ईको टूरिज्म : वाल्मीकि टाइगर रिजर्व



✍ कृष्ण मुरारी जयपुरियार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बिहार राज्य का चंपारण जिला जो बाद में दो जिलों — पश्चिम चंपारण और पूर्वी चंपारण में बट गया, के पश्चिम चंपारण जिले के पश्चिम में लगभग 901 वर्ग किलोमीटर में फैला नेपाल के तराई में हिमालय की शिवालिक श्रेणियों के श्रृंखलाओं एवं गंगा के मैदान के मध्य फैला एक घना जंगल क्षेत्र है। जिसे वाल्मीकी टाइगर रिजर्व अर्थात भी०टी०आर० के नाम से भी जाना जाता है। यह प्रदेश का एक मात्र टाइगर रिजर्व है। चंपारण शब्द दो शब्दों— चंपा और अरण्य से मिलकर बना जिसे पहले चंपारण्य के नाम से जाना जाता था जो बाद में अपभ्रंश के बाद चंपारण हो गया।

वाल्मीकी टाइगर रिजर्व भारत का राष्ट्रीय पशु बंगाल टाइगर का आश्रय स्थली है जहां इसके अलावे अन्य कई जानवर यथा जंगली भैंसा या गौड़, भालू, सांबर, हिरण, घड़ियाल, गैन्डा आदि भी भरपुर पाये जाते हैं। भारत सरकार के वर्ष 2023 के प्रतिवेदन के अनुसार यह रिजर्व भारत में सबसे अधिक तेजी से ब्याघ्रों के संख्या में वृद्धि दर पाने वाला स्थान बन गया है। जहाँ वर्ष 2010 में इसकी संख्या मात्र 8 थी जो वर्ष 2023 के प्रतिवेदन के अनुसार वर्ष 2022 में 54 हो गया है।

संयोगवश मुझे भी इस क्षेत्र में जाने का अवसर मिला जब मैं इसकी लेखापरीक्षा के सिलसिले में बेतिया गया। पूरा वाल्मीकी टाइगर रिजर्व दो वन प्रमण्डलों में बटा हुआ है और ये दो प्रमण्डल कुल आठ प्रक्षेत्रों में बटा हुआ है परन्तु इसमें प्रक्षेत्र मंगुराहा, गोबर्धना और वाल्मीकी नगर एक बहुत ही खूबसूरत पर्यटक स्थल भी है। वैसे तो हमे लेखापरीक्षा के कारण इस क्षेत्र के भ्रमण का अवसर मिला। आपको इसके भ्रमण की पूरी जानकारी <https://valmikitigerreserve.com> पर प्राप्त हो जाएगी। राज्य सरकार ने इसे एक अद्भुत पर्यटन



स्थल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ा है।

हमने भी मंगुराहा और वाल्मीकी नगर दो जगहों पर रात्रि विश्राम कर वहां के जंगल भ्रमण एवं इसके प्राकृतिक छटा का खूब आनंद लिया। मंगुराहा के लिए आप नरकटियागंज तक ट्रेन तक और फिर वहां से लगभग 25 कि०मी० सड़क मार्ग से जा सकते हैं। हमने बेतिया जिला मुख्यालय से ही सड़क मार्ग से वहां तक की यात्रा की जो लगभग 60 कि०मी० दूर था। यह फोर लेन तो नहीं परन्तु यात्रा के लिए अच्छी थी और फिर भारत के गाँवों के बीच होते जंगल तक की यात्रा का एक अलग आनंद है। रास्ते में महात्मा गांधी का भित्तिरहवां आश्रम है, जहां से महात्मा ने चंपारण सत्याग्रह की शुरुआत की थी, तथा लौरया का अशोक स्तम्भ भी है, जिसे आप अपने पर्यटन में शामिल कर सकते हैं। इन सभी स्थानों के अतिथि गृहों का आरक्षण आप उपरोक्त

वेबसाइट पर ऑनलाइन भी करा सकते हैं। मानसून के समय को छोड़कर यहां सालो भर आप जंगल सफारी का मजा ले सकते हैं, परन्तु बाघों का दर्शन बहुत संयोग है क्योंकि सामान्यतः वे सफारी के रास्ते नहीं आते। किन्तु हमारा भाग्य अच्छा था जिस कारण शिकार के लिए आया हुआ एक बाघ हमें दिख गया जो हिरणों के झुंड के पीछे घात लगा कर बैठा था परन्तु हमने उसके शिकार में खलल डाल दिया और वह भाग गया या यूँ कहें कि हमारे कारण किसी हिरण की जान बच गयी।

बिहार सरकार ने ईको टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए इन प्रक्षेत्रों का काफी विकास किया है। जिसमें सबसे प्रमुख वाल्मीकी नगर प्रक्षेत्र है। यह गंडक नदी के किनारे गंडक बैराज जिसे नेहरू बैराज भी कहा जाता है, के निकट नेपाल के सीमा के काफी करीब है। इस बैराज के इस पार भारत है तो दूसरी ओर नेपाल का क्षेत्र है। इसलिए यह वन विभाग के साथ-साथ सीमा सुरक्षा बल के जवानों एवं सिंचाई विभाग के भी अधिकारियों एवं कार्मिकों का भी कार्यक्षेत्र है। यहां आप या तो सड़क मार्ग से या ट्रेन से आ सकते हैं। सड़क मार्ग से पटना से इसकी दूरी लगभग 300 कि०मी० है वहीं बेतिया जिला मुख्यालय से लगभग 100 कि०मी० है।

इस क्षेत्र का नाम रामायण काल के प्रसिद्ध महर्षि वाल्मीकी के नाम पर है जहां कभी इनका आश्रम था।

वैसे तो आश्रम नेपाल की सीमा में है पर इसके लिए आपको इस भी०टी०आर० के घने जंगलों से होकर ही जाना पड़ेगा। कहते हैं इसी स्थान पर माता सीता ने प्रभु श्रीराम के पुत्र लव और कुश को जन्म दिया था और ये वीर बालकों ने श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ के घोड़ों को यहीं पर पकड़ा था। यहां पर एक छोटा सा मंदिर भी है। कहा जाता है कि माता सीता ने यहीं पाताल में प्रवेश किया था। इसके अलावे भगवान का मंदिर जटाशंकर मंदिर, भोलेश्वर मंदिर और नरदेवी का मंदिर भी दर्शनीय स्थानों में से एक है। सबसे खूबसूरत वन विभाग का अतिथि गृह है जहां से आप गंडक नदी की विशालता, नेपाल के हिमालय के शिवालिक श्रेणियों के दर्शन और जंगल की प्राकृति छटाओं का एक साथ आनंद ले सकते हैं। यहां हमें बाघ तो नहीं मिला पर जंगली भैंसा अर्थात गौड़, भालू, हिरण एवं सांभरों का झुण्ड, मोर, विशालकाय उल्लू आदि दिखे।

वहां के वन प्रमंडल अधिकारी श्री नीरज नारायण के अनुसार यहाँ घुमने के लिए सबसे उत्तम समय जनवरी-फरवरी का समय है जब पतझड़ में पेड़ों के पत्ते गिर जाते हैं और जंगल में दृश्यता बढ़ जाती है। इस तरह वन्य जीवों एवं पेड़-पौधों से प्रेम रखने वाले और साहसिक यात्रा में रुचि रखने वालों के लिए यह एक अद्वितीय स्थान है। ♦



सोशल मीडिया का सही उपयोग जरूरी है

पिछले दो दशकों में, दुनिया ने संचार में अभूतपूर्व परिवर्तन देखा है, जिसका मुख्य कारण सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का उदय है। सोशल मीडिया ने न केवल लोगों के जुड़ने और संवाद करने के तरीके को बदल दिया है, बल्कि इसने समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं पर भी महत्वपूर्ण और गहरा प्रभाव डाला है।

विकास और प्रगति— तकनीकी प्रगति और इंटरनेट की बढ़ती पहुंच के परिणामस्वरूप सोशल मीडिया का उदय हुआ। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंकडइन, यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म लोगों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं, जो उन्हें वैश्विक दर्शकों के साथ विचारों, कहानियों, चित्रों और वीडियो को तुरंत साझा करने में सक्षम बनाते हैं। समय के साथ, ये प्लेटफॉर्म सरल टेक्स्ट-आधारित इंटरैक्शन से लेकर मल्टीमीडिया-समृद्ध अनुभवों तक विकसित हुए हैं, जिनमें फोटो, वीडियो, लाइव स्ट्रीमिंग और आभासी वास्तविकता शामिल हैं।

सकारात्मक प्रभाव— सोशल मीडिया ने दुनिया को एक वैश्विक गांव में बदल दिया है, जिससे दुनिया के विभिन्न कोनों से लोग जुड़ सकते हैं, साझा कर सकते हैं और बातचीत में शामिल हो सकते हैं। इससे जहां सांस्कृतिक आदान-प्रदान, अन्य देशों के लोगों से मित्रता और वैश्विक समुदाय की भावना को बढ़ावा मिला है वहीं दुनिया के किसी कोने में घटित घटना की जानकारी, ताजा समाचार सभी को तुरंत मिल जाती है। यह प्रतिष्ठित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस जैसे कि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंकडइन, यूट्यूब, रिल्स, व्हाट्सएप, स्नैपचैट, रेडिट आदि है।



✍ सतीश चन्द्र

सेवानिवृत्त सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

व्यापार और विपणन— व्यापारी उत्पादनकर्ता सोशल मीडिया का उपयोग अपने उत्पादों और सेवाओं का प्रमोशन करने, ग्राहकों के साथ संवाद करने और ब्रांड की निर्माण के लिए करते हैं।

शिक्षा, छात्र और शिक्षक— शिक्षक, विशेषज्ञ और छात्र सोशल मीडिया के माध्यम से ज्ञान, सूचना और शिक्षा साझा करते हैं।

नकारात्मक प्रभाव— सोशल मीडिया पर नकारात्मक टिप्पणियों, ट्रोलिंग और वाद-विवाद का बढ़ता प्रसार हो सकता है, जिससे लोगों की भावनाओं को क्षति पहुंच सकती है।

आत्म-मूल्य संबंधी मुद्दे— सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपने आपको दूसरों से तुलना करते हैं, जो कई बार आत्म-समर्पण और आत्म-मूल्य में कमी का कारण बन सकता है।

फेक न्यूज और अफवाहों का प्रसार— फेक न्यूज एक प्रकार की गलत, असत्य या मिथ्या जानकारी होती है जो सामाजिक मीडिया, न्यूज प्लेटफॉर्मस या अन्य डिजिटल स्रोतों के माध्यम से प्रसारित की जाती है। यह खबरें या जानकारियाँ हो सकती हैं जो वास्तविकता से पूरी तरह से अलग होती हैं या फिर उनका किसी विशिष्ट दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाता है। इन कारणों से, फेक न्यूज और अफवाहें

आसानी से फैल सकती हैं और लोगों को गलत या असत्य सूचनाओं का सामना करना पड़ सकता है, जिससे सामाजिक और राजनीतिक सद्भावना पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। कई लोग अपने विचारों को प्रसारित करने के लिए फेक न्यूज या अफवाहों का सहारा लेते हैं। कई बार फेक न्यूज और अफवाहें उस व्यक्ति, समूह या संगठन के खिलाफ प्रसारित की जाती हैं जिनसे व्यक्तिगत या राजनीतिक विरोध हो सकता है। कई बार राजनीतिक या सामाजिक अभियानों या संगठनों द्वारा फेक न्यूज का प्रसार किया जाता है। हाल के कुछ महीनों में देश में कई अफवाहों और झूठी खबरों का सोशल मीडिया के माध्यम से समुदायों को दिग्भ्रमित किया जिसके कारण दंगों के प्रसार में मदद हुई।

मानसिक स्वास्थ्य और सुरक्षा— आजकल, सोशल मीडिया ने मानसिक स्वास्थ्य पर भी बड़ा प्रभाव डाला है। लोग अक्सर सोशल मीडिया के दबाव के चलते खुद को तुलना में रखते हैं जोकि उनकी मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। बच्चों में चिड़चिड़ापन और मोटापन बढ़ रहा है। सोशल मीडिया पर सेफ्टी और सुरक्षा के भी मामले उभर रहे हैं, क्योंकि ऑनलाइन उत्पीड़न और साइबरबुलिंग का खतरा बढ़ रहा है। लम्बे समय तक सोशल मीडिया पर समय बिताने से व्यक्तिगत संबंधों, शिक्षा और सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

सावधानियाँ और नकारात्मक प्रभाव से बचाव— समय-समय पर सोशल मीडिया का सही तरीके से उपयोग करना और इसकी सावधानियों को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है, ताकि हम इसके लाभ उठा सकें और नकारात्मक प्रभावों से बच सकें।

सोशल मीडिया का सही तरीके से उपयोग करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं, जो आपको इससे होने वाली हानियों और नकारात्मक प्रभाव से निपटने में मदद कर सकती हैं।

1. व्यक्तिगत जानकारी जैसे कि जन्मतिथि, पता, फोन नंबर आदि को सोशल मीडिया पर साझा



न करें। इससे आपको गोपनीयता बनाए रखने में मदद मिलेगी।

2. सशक्त पासवर्ड्स का उपयोग करें जिनमें अल्फाबेट्स, नंबर्स, और स्पेशल करैक्टर्स हों। ऐसा पासवर्ड चुनें जिसे कोई आसानी से भेद न सके। यह सुनिश्चित कीजिये कि केवल आपके चयनित लोग ही आपकी व्यक्तिगत जानकारी को देख सकते हैं।

3. स्थानिक जानकारी को साझा करने के पहले कई बार सोचें क्योंकि यह आपकी वर्तमान स्थिति को पता लगाने के लिए कोई उपयोग कर सकता है और आपके जीवन, घर, संपत्ति के लिए खतरा पैदा कर सकता है। कहीं आने जाने की सूचना देने से बचें।

4. सोशल मीडिया पर अज्ञात लोगों के साथ मित्रता न करें और उनके साथ प्राइवेट जानकारी साझा न करें।

5. सुरक्षा अपडेट्स के नियमों का पालन करें। आपके सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ऐप्लिकेशन को नवीनतम सुरक्षा अपडेट्स के अनुसार रखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये अपडेट्स नवीनतम सुरक्षा प्रौद्योगिकियों को शामिल करते हैं जो आपकी जानकारी की सुरक्षा में मदद कर सकते हैं।

सोशल मीडिया का सही तरीके से उपयोग करने के लिए गोपनीयता संरक्षण के मामले में सतर्कता और जागरूकता बनाए रखना आवश्यक है। सोशल मीडिया के लाभों और संभावित नुकसानों के बीच संतुलन बनाना इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करते हुए इसकी क्षमता का उपयोग करने के लिए महत्वपूर्ण है। ♦

कार्यालयीन गतिविधियाँ

नवचयनित आई.ए.एस. अधिकारियों का प्रशिक्षण



राज्य लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड की बैठक दिनांक 18-9-2023



कार्यालयीन गतिविधियाँ

प्रहरी के 68वें अंक का लोकार्पण

